Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

6581. Price Rs. /4/ Cl. No. 2917

रागसङ्ग्रह

راگ سنگرہ

श्री विद्वच्छिरोमणि कवि कुल कल्प द्रुम श्री हरिश्चन्द्र कवि कृत

by Hari Shankar

जिसमें

श्री भक्त जनाधार पर ब्रह्म ईश्वर रूप श्री कृष्ण चन्द्र और श्री दाशरथि रामचन्द्र महाराज और अनेक देवी देवताओं के रागसहित भजन भक्ति भाव अभिलाषियों के भजन स्मरण के निमित्त सुगमता पूर्वक वर्णित हैं

स्वच्छता पूर्वक शुद्ध होकर

पहिली बार

लखनऊ

NKP Lucknow

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् जनवरी सन् १८८२ई॰ पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
संस्कृत की पुस्तकें	जातकालंकार स॰	१ पहिले हिस्सा में	२ सभापर्व्व
लघुकौमुदी	जातकाभरण	आदिपर्व्व, सभापर्व्व,	३ बनपर्व्व
सिद्धान्तचन्द्रिका	होरामकरंद	बनपर्व्व,	४ विराट पर्व्व
अमरकोश तीनोंका॰ स॰	संस्कृत उर्दू टी॰ स॰	२ दूसरे हिस्सा में वि-	५ उद्योग पर्व्व
पंचमहायज्ञ	मनुस्मृति	राटपर्व्व, उद्योगपर्व्व,	६ भीष्म पर्व्व
निर्णयसिन्धु	विष्णुहारीत	भीष्मपर्व्व, द्रोणपर्व्व,	७ द्रोणपर्व्व
संग्रहशिरोमणि	महिम्नस्तोत्र	३ तीसरे हिस्सा में क-	८ कर्णपर्व्व
भगवद्गीता सटीक	संस्कृत भा॰ टी॰ स॰	र्णपर्व्व, शल्यपर्व्व,	९ शल्यपर्व्व व गदा
दुर्गापाठ सटीक	अमरकोष	गदा पर्व्व, सौप्तिक प-	व सौप्तिकपर्व्व मये
विष्णुभागवत	याज्ञवल्क्यस्मृति	र्व्व, ऐषीक पर्व्व, वि-	ऐषीक व विशोक
भविष्योत्तरपुराण	संध्यापद्धति	शोक पर्व्व, स्त्रीपर्व्व,	व स्त्री पर्व्व
अपराधभञ्जनस्तोत्र	व्रतार्क	शांतिपर्व्व, में राजधर्म्म	१० शांतिपर्व्व राज
दुर्गास्तोत्र	भगवद्गीताटी॰ हर्व॰	आपद्धर्म्म मोक्ष-	धर्म्म व आपद्धर्म्म
कायस्थकुलभास्कर	भगवद्गीताटी॰ आर्नि॰	धर्म्म	व मोक्षधर्म्म व दानधर्म्म
कायस्थधर्मनिरूपण	गीतगोविंद	४ हिस्सा में शान्ति	११ अश्वमेध आ-
तथा छोटा	कथा सत्यनारायण	पर्व्व दान धर्म्म अ-	श्रमवासक मुशल
मथुरा सभा	परमार्थसार	श्वमेध आश्रम वा-	पर्व्व महाप्रस्थान स्व-
ज्योतिष	शार्ङ्गधर संहिता	सिक पर्व्व व मौसल	र्गारोहन
मुहूर्त्तगणपति	पाराशरी सटीक	पर्व्व व वानप्रस्थान	१२ हरिवंश पर्व्व
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	शीघ्रबोध सटीक	स्वर्गारोहन पर्व्व	रामायण रामविलास
मुहूर्त्तचिन्तामणि स॰	लघुजातक	हरिवंश पर्व्व	रामायण तुलसीकृत
मुहूर्त्तमार्त्तण्ड स॰	षट्पंचाशिका	महाभारत पर्व्व अ-	रामायण सटीक मये
मुहूर्त्तदीपक	सामुद्रिक	लहदा भी हैं	मानस दीपिका कोष
वृहज्जातक स॰	भाषा (इतिहास) महाभारत	१ आदिपर्व्व	आदि तथा जिल्द [illegible]

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

LIBRARY JAMMOO 2917

PRATAP SINGH MUSEUM SRINAGAR 2917

श्रीगणेशायनमः

अथ रागसंग्रह

लिख्यते

जल बिहार

सारंग ॥ आजु हरि विहरत यमुना तीर ॥ धु० ॥ श्यामा संग रंग भरि सोहत पहिने झीने चीर ॥ १ ॥ प्रथम समागम सकुचत प्यारी जब परसत बलबीर ॥ २ ॥ उघरत अंग भीनि जल बसनन लाजि भजत तव तीर ॥ ३ ॥ धीर समीर सोहायो लागत ते सोइ धीर समीर ॥ ४ ॥ हरीचन्द संगम गुन गावत छवि लखि धरत न धीर ॥ ५ ॥

दीपावली

ईमन ॥ आजु तरनि तनया निकट परम परम प्रगट ब्रज बधुनि मिलि रची दीप माला ॥ जोति जाल जग मग जगत हरि थिर नहिं लगत छूट छबि की परत अति बिशाला ॥ खड़ी नवल बनिता बनी चार दिसि छवि सनी हंसहि गावहिं करहिं विविध ख्याला ॥ निरखि सखी हरिचन्द अति चकित सी है कहति जयति राधे जयति नंद लाला ॥ १ ॥

ईमन ॥ आजु ब्रज छबि की छूट परे ॥ धु० ॥ इत नंद लाल लाड़ली इत इत दीपक जोति बरे ॥ १ ॥ इत सहचरी ललित ललिता दिक मुरछल चँवर ढरे ॥ २ ॥ इत जरतार तास बागे इत भूषन झलक भरे ॥ ३ ॥ इत नव खंड सौंज महलावत दुगुनित बिंब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वारे ॥ ४ ॥ इन बादलन लपेटी झालर झला बोर झलरें ॥ ५ ॥ इत सारी को रनसो मुक्ता मानिक हीर झरें ॥ ६ ॥ यमुना जल प्रति बिंब सुहायो जल छबि मिलि हल्लरें ॥ ७ ॥ हरीचन्द मुख चन्द मिली । सब रवि ससि गरब हरे ॥ ८ ॥

प्रबोधिनी एकादशी

बिहारा ॥ आजु सुहाग की राति रङ्गीली ॥ गावो नाचो करो बधाई कुंजनि मांझ छबीली ॥ ध्रु॰ ॥ गावत थोड़ी देव मनावत रस बरसत भर पूर ॥ हरीचन्द को टेरि टेरि के देत सखी सब भूर ॥ १ ॥

दीप दान

कान्हरा ॥ आजु संकेतन दीपक वारे ॥ ध्रु॰ ॥ विकट जानि गोबरधन घटियां अपने हाथ संवारे ॥ १ ॥ किये प्रकाशित गह्वर । गिरि थल कुंज पुंज ब्रज सारे ॥ २ ॥ हरीचन्द अपनी प्यारी की बाट निहारत प्यारे ॥ ३ ॥

नित्य बिहार

केदारा चौताला ॥ अरी हरि या मग निकसे आइ अचानक हौं तो झरोखे रही ठाढ़ी ॥ देखत रूप ठगोरी सी लागी बिरह बेलि । उर बाढ़ी ॥ गुरु जन के भय संग गइ नहिं रहि गई मनहुं विंव लिखि काढ़ी ॥ हरीचन्द बलि ऐसी लाज में लगोरी आग हौं बिरहा दुख दाढ़ी ॥ १ ॥ अरी सखी गाज परो ऐसी लोक लाज पै मदनमोहन संग जान न पाई ॥ हौं तो झरोखे ठाढ़ी देखती ही कछु आये इते में कन्हाई ॥ औचक दीठि परी मेरे तन हँस कछु बंसी बजाई ॥ हरीचन्द मोहि अति बिबस छोड़ि के प्रान लीने संग लाई ॥ २

ठुमरी ॥ उठि लात संवरिया भटने भगे ॥ धृ॰ ॥ कटि काछनि सिर । मुकुट बिराजत कांध पर सोहै पटुका लहरिया ॥ १ ॥ पहुंची बाजूबन माल अरु अंगुरिन २ सोहै मुंदरिया ॥ २ ॥ हरीचन्द मेरे मन ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बसो मोइ हरि राधा सोंहे जाकी नागरिया ॥ ३ ॥

श्री चंद्रावलीजी की बधाई

सारंग ॥ आजु ब्रज बाजत महा बधाई ॥ परम प्रेम निधि श्री चंद्रावलि चंद्र भानु नृप जाई ॥ १ ॥ प्रफुल्लित भई कुंज द्रुमवेली कीरादिक सुखपाई ॥ परम रसिक बर नन्दलाल हित प्रगट भूमि पै आई ॥ २ ॥ चंद्रभानु नृप दान देत बहु हय गय सकल लुटाई ॥ चंद्र कलारानी मुख दानी ताकी कूख सिराई ॥ ३ ॥ आये नन्दादिक सब मिलिकै महाभान घर धाई ॥ प्रगटी सबकी स्वामिनी कौब्रज सब मिलि नाचत गाई ॥ ४ ॥ चंपक लता बहुरि चन्द्रावलि तनया युगुल सुहाई ॥ प्रगटे ब्रज सुत हू ते दूनो करत उछाव बनाई ॥ ५ ॥ गुप्त रूप कोउ लखत नहीं कछु भेद न जान्यो जाई ॥ हरीचन्द श्री विठ्ठल पद लखि लख्यो भेद सुखदाई ॥ ६ ॥

श्री बल्देव जी की बधाई

सारंग ॥ आज ब्रज दूनो बढ़्यो अनंद ॥ भादों सुदी पंचमी स्वाती बुध प्रगटे यदुचन्द ॥ अग्रज श्री गिरि धारन जू के लीला ललित अमंद ॥ रोहिन माता उदर प्रगट भये हरन भक्त के दंद ॥ दान देत हरखे नन्द यशुमति हय गय रतनन कंद ॥ हरीचन्द बलि आनंद फूले गावत देव मुकुंद ॥

गोवरधन पूजा

बिलावल ॥ आजु वन उमंग फिरत अहीर ॥ हेरी देन बदत नहिं काहू दखियत जित तित भीर ॥ इक गावत इक ताल बजावत एक बनावत चीर । इक नाचत इक गाइ खिलावत एक उड़ावत छीर ॥ हमरो देव गुवरधन परवत सुन्दर श्याम शरीर । कहा करैगो इन्द्र बापुरो जावस केवल नीर ॥ सात दिवस गिरि कर धरि राख्यो वाम भुजा बल बीर ॥ हरीचन्द जीत्यो मो मोहन हार्‌यो इंद्र अधीर ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नित्य बिहार

बिहाग ॥ आजु चलि कुंजन देखहु छाई बिमल जुन्हाई ॥ पंच रंग ते धिरि धिरि आवत तातर सेज बिछाई ॥ समय निशीथ इकान्त भयो अति कहुँ कहुँ खग बोलत सुख पाई । ललिता दूर बजावत बीना मधुर मृदंगहु परत सुनाई ॥ आलिंगन परिरंभन को सुख लूटत तहाँ युगुल रस दाई ॥ हरीचन्द वारत तन मन सब गावत केलि बधाई ॥

श्री महा प्रभुजी की बधाई

सारंग ॥ आजु भयो साँचो मङ्गल भुव प्रगटे श्री बल्लभ सुख धाम । करुना सिंधु सकल रस पोषक पतित उधारन जाको नाम ॥ दैवी जीवन अभय दान दै रसिक जनन के पूरे काम ॥ हरीचन्द प्रभु मंगल मूरति गोर श्याम बपु एक ललाम ॥

श्री ठाकुर जी की बधाई

आसावरी ॥ आनंद सागर आजु उमडि चल्यो ॥ ब्रज में प्रगटे आइ कन्हाई ॥ नाचत ग्वाल करत कौतूहल हेरी देत कहि नन्द दुहाई । छिरकत गोपी गोप सबै मिलि गावत मंगलचार बधाई ॥ आनंद भरे देत कर तारी लखि सुर गन कुसुमन झरलाई ॥ देत दान मन मान नंद जू अति हुलास कछु बरनि न जाई ॥ हरीचन्द जन जानि आपु नो टेरि देत सब बहुत बधाई ॥ १ ॥

ग्रीष्म ऋतु

सारंग ॥ एरी फुहारन के दोउ कौतुक में उर भाने । धरत फूल फल नीर धार पर देखत रहत लुभाने ॥ कबहुँक चकई चलत चपल अध ऊरध बहु गति ठाने ॥ हरीचन्द रिझवत सब सखि मिलि नव जल केलि बहाने ॥ २ युगुल दोउ बैठे हो शीतल छाँह । सखी दादीं चारो ओर । फूली मन माह—राम

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तिन बिच प्यारी-पियादिये गल बाँह ॥ २ ॥

बिहार

बिहाग ॥ आजु दोउ बिरहत कुंजर कन्त ॥ श्यामा श्याम सरस रंग बाढ़े सुख को लहत न अन्त ॥ ज्यों ज्यों निसि भीनत रंग बाढ़त होत सुरत की कन्त । हारत कोउ न अभिरे दोउ मदन समर सामन्त ॥ तहाँ न जाइ सकत सखि गन हू जहाँ कामिनी कंत । हरीचन्द श्री वल्लभपद बल ताहि अनुभवत भन्त ॥

श्री नृसिंह चतुरदशी की बधाई

सारंग ॥ आजु अपमान अतिही निरखि भक्त को बैकुंठ बन सिंह बहुत को थो ॥ पटकि कर भूमि पै झटकि सिर केसर दद चाभि ओठन तेज गगन लोथो ॥ खंभ को फारि चिक्कारि केहरि नाद गर्भिनी गर्भ गर जल गिरायो । सटा फट कारिकै नक्षत्र गन नभहि फेंकि इत सों उलहि क्रोध छायो । कोटि मनु बिज्जु इक साथ ही गिरि परीं भयो अति घोर भुव सोर भारी । सिंधु जल उच्छल्यो गिरे पव्वर्त शिखर बृक्ष जड़ सों सबै दिये उजारी । देव दानव मनुज गिरे भय भाखि फ़ूटि गए कान सुधि तन की नाहीं । आज असमय प्रलय देखि शिव चौंकि के सूल धरि भ्रमत इत उत लखाहीं । स्रष्टि को क्रम भंग जानि विधि बावरो मूड़ पै हाथ धरि बहुत रोयो । दिसा दहिवे लगीं भयो उल्कापात रुदित सूरति तेज अगिन खोयो । त्रस्त मधुकर पिवत नाहिं मधु वृन्द को गऊ निज वत्स गन नाहिं चाटैं । हवि अगिन नहिं हरत उरत तहँ पौन नहिं गौन करि सकत तन भधुर पाटैं ॥ चकित माया नटी भूलि निज नरकला जगत गति जीव जड़ रोकि लीनी । रमा शृंगार निज करत ही रहि गई मनो सब चातुरी हारि दीनी । जगत जाको खेल बनत बिगड़त तनिक भौंह के इत सों उत हलन माहीं । सोई अलौ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कश्यपति आनुको आज बैतबै अब सबै कहैं सरन नाहीं मार हर-
नाक्ष उर फार कर नखन सों मार हर भूमि अति शाक टास्यो॥ गो-
द प्रहलाद अहलाद पूरव लियो चाट मुख चूनि जलन नयटा-
स्यो॥ राज दय अभय पद आप पदमा सहित गए बैकुंठ जय-
जगत छायो॥ प्रेम परधान परमान प्रेमीन उर भक्त वत्सल नाम
साच पायो॥ सदा संक दहरन अकर कारन करन कृपा कर नाम
जिय जौन धारै॥ त्रनु संताप यम जातना ताप हर अचल वर धा-
म निज सो विहारै॥ सदा प्रभु सर्वदा गर्भ हर अभय कर जन न-
उर मोरक्ष कर दुख हारी॥ पीर हरिचन्द की हरहु करुणाय त-
न चमित कलि काल नव शरण धारी॥ १॥

बसन्त पंचमी

राग बसन्त॥ आई हैं आज बसन्त पंचमी पियहि बसन्त ब-
धाओ॥ भरो रंगीले प्रान नाथ को काम बधाई गाओ॥ १॥ क-
नक कलस भरि केसर चरि चित आम मंजरी धारो। बिबिध-
कुसुम रचि माल अनेकन अपने हाथ सँवारो॥ २॥ गावत च-
लो नन्द पोरी मिलि मन अभिलाष बढ़ाये॥ छिर को प्रान
नाथ चहुं दिशि सो करहु सबहि मन भाये॥ ३॥ भरहु अंक
भुज बांधि पिया को मुख चूमहु पर लाई। छांड़ि संक गुरु लो-
गन की अब लेहु नै साध पुजाई॥ ४॥ कहैं हरि कहैं ब्रज क-
हैं यह औसर कहँ यह तान फिरैहौ। समय चूकि पछिता-
ये का पुनि देखत ही रहि जैहो॥ ५॥ उठो मिलो चलि पीतम
सों अब करो सबै मन भाए। पुरवो सकल मनोरथ जिय के ह-
रिचन्द गर लाए॥ ६॥

हिंडोरा

चौताला॥ श्याम घटा मधि स्यामहिं डोरो बन्यो श्यामा स्याम भू-
लें जामें अतिही अनन्द सों॥ तैसोई तमाल कुंज श्याम रंग २

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोहत गोपी सब मिलि गावैं अनन्द के कंद सो ॥ १ ॥ अलिपिक मोर नील कंठ श्याम रंग सोहै स्यामाश्री यमुन बहै गति अति मंद सो ॥ हरीचन्द हरिको निरखि छवि महादेव श्याम गजखाल ओढ़ि नाचैं गावैं छन्द सो ॥ १ ॥

बिरह

ठुमरी ॥ अकुलात गुजरिया दुख ते भरी ॥ ध्रु० ॥ तन की सुधि तनै की नहिं जब ते लागी हरि की तिरछी नजरिया ॥ १ ॥ तलपत रहत बिरह दुख भारी देत कोउ नहिं पिय की खबरिया ॥ २ ॥ हरीचन्द पिय बिन अति व्याकुल रोवत सूनी देख सिजरिया ॥ ३ ॥

धमार

सिंदूरा ॥ श्री डफ धुंकार सुनि घर न रहौंगी मिलौंगी मीत को धाय ॥ ध्रु० ॥ फागुन लहि उमग्यो जो मदन जिय सो अब रोकि न जाय ॥ १ ॥ प्यारा नाथ आवन सुनि फिर धग घर में क्यों ठहराय ॥ २ ॥ हरीचन्द गर लगौंगी पिया के जाने जगत बलाय ॥ ३ ॥

छाक के पद

मलार ॥ आरोगत नागर नन्द किशोर ॥ ध्रु० ॥ चहुं दिशि तेज घटा जुरि आई बोलत दादुर मोर ॥ १ ॥ नान्ही बूंदन बरसन लागी पवन चलत झकझोर ॥ २ ॥ चतुर्भुज प्रभु पाक लै भाजे सघन कुंज की ओर ॥ ३ ॥

बिहार

बिहाग ॥ आजु रस कुंज महल में बतियन रैन सिरानी जात ॥ ध्रु ॥ जाल रंध्र तें भरित चांदनी चलत मंद क घुसी तल्ल बात ॥ सन सनात निसि झिल्लि मिलि दीपक पात खरक बिच बीच सुनात ॥ रगमगे दोऊ भुज दिये सिरान्हे आल सबस मुसकात जंभात ॥ मधुर बिहारा सुनात दूरसों लपटि रहे विथकित सब गात ॥ हरीचन्द दोउ रूप लालची शिथिल तऊ जागे न अघात ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नित्य यथारुचि

आजु तनु नीलाम्बर अति सोहे ॥ ध्रु० ॥ तिसहि केश खुले मुख ऊपर देखत ही मन मोहे ॥ मनुत मगन लियो जाति चंद्रमा सो तिन मध्य बंध्यो है ॥ के कवि निज जजमान जूथमें सुंदर आइ बस्यो है ॥ श्री यमुना जल कमल खिल्यो कोउ लखि मन अति लल्च्यो है ॥ जानि तमो गुन को ताके सिर मनु सतो गुन लिव सोहे ॥ सघन तमाल कुंजमें मनु कोउ कुन्द फूल प्रगस्यो है ॥ हरीचन्द मोहन मोहन छवि बरनै सो कवि को है ॥ १ ॥

मलार चौताला

हिंडोर ॥ आजु ब्रज बधू फूली फूलन के साज सजि प्यारी को झुलावत फूल के हिंडोरे । फूली ब्रज भूमि सब द्रुमलता रहे फूलि तैसोई पवन बहे फूल के झकोरें । फूली सखी एक आई साँवरे सलोने गात फूली प्यारी कराठ लगी प्रेम के हलोरें ॥ हरीचन्द बलि हारी फूलि फूलि जात वारी संगम गुन गावत सुर घोरें ॥ १ ॥

बिहार यथारुचि

आजु मैं देखेरी आलीरी दोऊ मिलि पोढ़े ऊँची अँटारी । मुख सों मुख मिलाई बीरी खात रंग भरि नवल पिया प्रान प्यारी । चाँदनी प्रकास चारु ओर छिरकाव भयो सीतल चहुं दिसि चलत बयारी ॥ हरीचन्द सखी गन करत बींजना जानि सुरत श्रमभारी ॥ १ ॥

ग्रीष्म ऋतु फूल के सिंगार के पद

राग यथारुचि ॥ आज सखी फूले हरि फूल कुंज माहीं । प्यारी को संग लिये दीन्हे गल बाहीं ॥ १ ॥ फूलन के अङ्गन सब आभरन अति सोहैं । देखि देखि ब्रजजन के मन को अति मोहैं ॥ २ ॥ बिछिया पग रहे बेलि चित की गति हरती । पंकज की पायजेब पाय जेब करती ॥ ३ ॥ मदनबान फूलन की कटि किंकिनी राजे ॥ कलि बन की चोली सोध जोबन —

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अति भ्राजै ॥ ४ ॥ चंपक की कली बनी चंपकली भारी ॥ फूलन के हार कंठ सोहत रुचि कारी ॥ ५ ॥ भविश्रा कर फूलन के बाजू बंद दोऊ ॥ फूलन की पहुँची कर राजत अति सोऊ ॥ ६ ॥ फूलनकी चूरी इमि दोउ कर साजै ॥ चंदन के डार मनहु लपटि लता राजै ॥ ७ ॥ पल्लवसी अँगुरिन में मुंदरी छवि देहीं । देखत ही मोहन मन हाथन सों लेहीं ॥ ८ ॥ करना के करन फूल करन बीच धारे । झुमका दोउ झूमत लखि मानो मत वारे ॥ ९ ॥ फूलन की झुलनी नक बेसर बिच धारी । प्यारे को चित्त मनो पोहि धर्यो प्यारी ॥ १० ॥ मदन बान फूलन की बन्दी अनुरागै । देखत ही लालन हिय मदन बान लागै ॥ ११ ॥ बेना सिर फूल हि को देखत मन भूल्यो । रूप की लता में मनो एक फूल फूल्यो ॥ १२ ॥ बेनी सिर फूलन की सोहत छबि छाई ॥ आप ने कारि नन्द लाल गूँथि के बनाई ॥ १३ ॥ नख सिख ते फूलन के आभरन सब धारी । फूलन के लहँगा अरु फूलन की सारी ॥ १४ ॥ फूली छवि देखि देखि नन्द लाल फूल्यौ । भ्रमर होइ मेरो मन हरीचन्द भूल्यौ ॥ १५ ॥

यथा यथा

आजु सखी ब्रज राज लाड़िलो नव दूलह बनि आयो । फूल सेहरो शीश बिराजै फूलनि साज सजायो ॥ १ ॥ फूलनि के आभरन बिराजत फूलनि माल बनाई । फूलन चंवर दुरत दोऊ दिशि फूल छत्र सुखदाई ॥ २ ॥ घोड़ी सजी फूल के गहिने फूल लगाम बनाई । फूले फूले सकल बराती तन धन देत लुटाई ॥ ३ ॥ फूले देव विमानन भूले फूलनि की झरि लाई । हरीचंद ऐसी जोरी पै फूलि फूलि बलि जाई ॥ ४ ॥

ग्रीष्म

सारंग ॥ आजु नन्दलाल पिय कुंज ठाढ़े भए अवत सुभ ग्रीषम पै कल्पित कुसुमावली । मनहुँ निज नाथ सखि देखि कै खसित आकाश-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

ते तरल तारावली। बहत सौरभ मिलिन सुभगत्र्यविधि पवन गुंजरत भ्रहारस मत्त मधुपावली। दास हरिचन्द ब्रज चन्द ठाढ़े मध्यराधिका बाम दक्षिण सुचन्द्रावली ॥ १॥

मकर संक्राति

यथा॥ अहो हरि नीको मकर मनाए॥ चित्र चमन धरि भले लाड़िले पुराय समय घर आये। कहा परव कियो दियो दान रस तिल तन प्रगट लखाए॥ हरीचन्द रविचरी से मिलि क्यों किन तिरबेनी न्हाए॥१

श्री महाप्रभुजी की बधाई

सारंग॥ आजु भयो साँचो मंगल भुव प्रघटे श्री वल्लभ सुख धाम। करुणा सिंधु सकल रस पोषक पतित उधारन जाको नाम। दैवी जीवन अभय दान दै रसिक जनन के पूरे काम। हरीचन्द प्रभु मंगल मूरति गौर श्याम तन एक ललाम॥१॥

दीपावली

यथा रुचि॥ आजु तरनि तनया निकट परम परम अगट ब्रज बधुन मिलि सरस दीप माला। जोति जाल जग मगन दृष्टि थिर नहिं लगत छूट छवि की परति अति बिशाला। खड़ी नवन बनिता बनी चारु दिशि छवि सनी हंसहिं गिरधर करहिं विविध ख्याला। निरखि हरीचन्द अति चकित सी ह्वै कहति जयति राधे जयति नन्द लाला॥१॥२ आजु ब्रज छवि की छूट परै। इत नन्द लाल लाड़िली इत इत दीपक जोति बरै॥ इत सह सरी ललित ललिता दिक सुरछल चँवर दरै॥ इत जर तार तास बागो इत भूषण झलक भरै। इत नव खराड शीश महलाइत दुगुनित विंव परै। इत बादलन लपेटी झालर झला बोर झलरै। इत सारी कोरन सों मुकुता मानिक हीर भरै। यमुना जल प्रति बिंब सुहायो जल छवि मिलि हलरै। हरीचन्द मुख चन्द मिली सब रवि शशि गरब हरै॥२॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तथा ॥ आजु मंकेतन दीपक वारे। निकट जानि गोवरधनघटियां अपने हाथ सवाँरे। किये प्रकाशित गहवर गिरिथल कुंज पुंज ब्रज सारे। हरिचन्द अपनी प्यारी की बाट निहारत प्यारे ॥१॥

तथा ॥ अरी तूं हठि चलि प्यारी दीप मराडल तें क्यों सोभा हरि लेत। तेरे मुख प्रकाश दीपक गन मन्द दिखाई देत। मंद परे आभा सब मेटी झिल मिलि झीने सेत। हरीचन्द तू द्दूरी बैठि के कर त्यो हार सहेत ॥२॥

प्रबोधिनी

बिहाग॥ आजु सुहाग की राति रसीली। गावो नाचो करो बधाई कुंजन मांझ छबीली। गावत घोड़ी देव मनावत रस बरषत भर पूर। हरीचन्द को टेरि टेरि के देत सखी सब भूर ॥१॥

श्री स्वामिनीजी की बधाई

यथा रुचि ॥ आज ब्रज होत कुलाहल भारी। बरसाने वृषभान गोप के श्री राधा अवतारी। गावत गोपी रस में ओपी गोप बजावत तारी। आनंद मगन गिनत नहिं काहू देत दिवावत गारी। देत दान सनमान भान जू कनक माल मनि सारी। जो जो जांचत तासों बढ़ पावत हरीचन्द बलि हारी ॥१॥

तथा ॥ आजु बन ग्वाल कोऊ नहिं जाई ॥ कहत पुकारि सुनो रे भैया कीरति कन्या जाई। लावहु गाय सिंगारि बच्छ सह सुवरन सींग मढ़ाई ॥ मोर पंख मखतूल झूल धरि अंग अंग चित्र कराई। आजु उदय सांचो सब ब्रज को गावहु गीत बधाई ॥ हरीचंद्र वृषभान बवा सों बहुत निछावरि पाई ॥२॥

तथा॥ आनन्दे मुख हेरि हेरि। ब्रज जन गावत देत बधाए नचत पिछौरी फेरि फेरि। उनमद गिनत न ग्वाल कछू ब्रज सुन्दरि राखी घेरि घेरि ॥ हेरी दै दै बोलत सबहीं ऊंचे सुर सों टेरि टेरि। छिरकंत हंसत हंसावत धावत राखत दधि घृत भेरि भेरि। हरीचन्द ऐसो सुख ।५

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निरखत तन मन वारत बेरि बेरि ॥ १ ॥

तथा ॥ आनंद आजु भयो बरसाने जनमी राधा प्यारी जू । त्रिभुवन सुखदानी ठकुरानी जननी जनक दुलारी जू ॥ सुर नर मुनि जेहि ध्यान धरत हैं गावत वेद पुकारी जू । सो हरिचन्द बसत बरसाने मोहन प्रान अधारी जू ॥ १ ॥

तथा बिलावल ॥ आजु भोन ब्रषभान के प्रगटी श्री राधा । दूरि भई है री सखी त्रिभुवन की बाधा । को कवि जो छबि कहि सके कछु कहि नहिं आवै । आनन्द अति परगट भयो दुख दूरि बहावै । डारहिं सब ब्रज गोपिका तन मन धन वारी । हरीचन्द श्री राधिका पद पैं बलिहारी ॥ १ ॥ तथा

भैरौं ॥ आजु तो आनन्द भयो कापै कहि जावै । भूलैं सब गोपि ग्वाल इत उत बहु डोलैं । वाढ्यो अति हिय हुलास जेजे मुखबोलैं ॥ पहिरि पहिरि सुरंग सारी आईं ब्रज नारी । गावैं हिय मोद भरी देदे कर तारी ॥ दान देत भानु राय जाको जो भावें । हरीचन्द आनन्द भरि राधा गुन गावैं ॥ १ ॥

तथा कान्हरा ॥ आई भादौं की उजियारी ॥ आनन्द भयो सकल ब्रज मंडल प्रगटी श्री ब्रषभान दुलारी । कीरति जू की कोष सिरानी जाके घर प्यारी अवतारी । हरीचन्द मोहन जू की जोरी बिधना कुँवरि सँवारी ॥ १ ॥

तथा ॥ आजु बरसाने नौबत बाजैं ॥ बीन मृदंग ढोल सहनाई गह गह दुंदुभि गाजें । सब ब्रज मराडल शोभा बाढ़ी घर घर सब सुख साजैं । हरीचन्द राधा के प्रगटे देव बधू सब लाजैं ॥ १ ॥

तथा ॥ आजु ब्रज आनँद बरसि रह्यो । प्रगट भई त्रिभुवन की शोभा सुख नहिं जात कह्यो । आँनंद मगन नहीं सुधि तन की सब दुख दूरि बह्यो ॥ हरीचन्द आनन्दित नेहि छन चरण कि शरण गह्यो ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तथा ॥ आजु कहा नभ भीर भई ॥ सजनी कौन फूल बरसावै सुख की बेलि बई । बालक से चारहु को आये तीन नैन को कोहै । ओढ़े बघम्बर सरप लपेटे जटा धरे सिर सोहै । तीनि चारि अरु पांच सात षट मुख के मिलि क्यों नाचैं । बड़ी जटा मुख तेज अनूपम को यह वेदहि बांचैं । बीन बजावति कौन लुगाई हंस चढ़ी क्यों डोलै । को यह यंत्र बजाय रही है जै जै जै बोलै । को यह लिये तमूरा ठाढ़ी को नाचै को गावै ॥ इत आवै कोउ बातन पूछत पुनि नभ लौं चलि जावै ॥ अति आचिरज भरीं सब तन में बात करैं ब्रज नारी ॥ प्रगट भई व्रषभानु राइ घर मोहन प्रान पियारी । आनंद बढ़्यो कहत नहिं आवै कवि की मति सकुचाई ॥ राधा श्याम चरण पंकज रज हरीचन्द बलि जाई ॥ १ ॥

तथा ॥ आजु प्रकट भई श्री राधा आजु प्रगट भईं । गोपिका मिलि बरखन सों भानु नगर गईं ॥ आइ नन्द जसोमति मिलि होत अधिक अनंद । भानु बरसाने उदय भो प्रगट पूरन चन्द । होत जय जय कार उहि पुर देव बरषैं फूल ॥ हरीचन्द सब गोपिका के मिटे उर के सूल ॥ १ ॥

तथा सारंग ॥ आजु दधि कांधो है बरसाने ॥ छिरकति गोपी गोप सबै मिलि काहू को नहिं माने । आनन्दित घर की सुधि भूली हम कोहैं नहिं जाने । दधि घृत दूध उड़े ले सिर सों फिरहिं अतिहि सरसाने । वह आनन्द कापै कहि आवै भयो जौन महराने । श्री वल्लभ पद पद्म कृपा सों हरीचन्द कछु जाने ॥ १ ॥

तथा ॥ आए ब्रज जन धाय धाय । नाचत करत कोलाहल सब मिलि तारी दै दै गाय गाय । जुरे आइ सिगरे ब्रज वासी टीको बहु विधि लाय लाय । हरीचन्द आनन्द अति बाढ़्यो कहत नन्द सों जाय जाय ॥ २ ॥

तथा ॥ आजु भयो अति आनंद भारी । प्रगटी श्री ब्रषभान दुलारी । गोपी सब टीको ले आवैं । मिलि मिलि रहसि बधाई गावैं ॥ नाचत आप देत सब तारी । तन मन की कछु सुधि न सम्हारी । दान देति हैं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मनि गन हीरा। हेम पटम्बर पीअर चीरा। सुख बाढ़्यो तेहि छन अतिभारी॥ हरीचन्द छबि लखि बलिहारी॥२॥

श्री गोपीनाथ जी की बधाई

सारँग॥ आजु श्री बल्लभ के आनन्द। प्रगट भये ब्रज जन सुख दाई पूरन परमानन्द। गावत गीत सबै ब्रज बनिता सोहत हैं मुख चन्द। वेद पढ़त द्विज वर बहु टाढ़े देत असीस सु छन्द। गुप्त रूप कोउ प्रगटन जानत हलधर सब सुख कन्द। गोपी नाथ अनाथ नाथ लखि मन वारत हरिचन्द॥१॥

श्री ठाकुर जी की बधाई।

बिहाग॥ आयो समय महा सुख कारी। सब गुन गन संयुत मन रंजित अति शय परम सुशोभा धारी। रोहिनि नषत सात शुभ ग्रह सब कहा कहिये उपमा मति हारी॥ दिसा प्रसन्न हँसत नभ निरमल। तारन की बाढ़ी छवि भारी। मंगल मय धरनी सब राजत पुर आकर ब्रज गाँव सुखारी। नदी प्रसन्न सलिल तालन की कमलन सों। भइ शोभा भारी। द्विज अलि कुल सन्नाद करन लागे बन राजी फूलनि फुलवारी। पुराय गंध लै बह्यो महा शुभ वायु सविधि सुचि त्रिविधि बयारी। दुज जाँचन की शांत अगिन सब प्रगट भई कुराडन तें नारी। असुर द्रोह सब साधूजन के मन सु प्रसन्न भए ता बारी। अजनज नम को समय जानि के बजति लजति सब दुंदुभि सारी। गाइ उठे गन्धर्व रु किन्नर चारग साधु तुष्टि मन धारी। नाचन लगी देव अपसरा सह अति प्यारी सब घर की नारी। मुनि देवता महा आनन्दित बरसत फुल नभ भरि भरि थारी। सागर के गरजन के पीछे मंद मन्द गरजे जल धारी। आधी राति उदित भयो चन्दा आनँद। करत हरत अँधियारी। देवि रूपिनी देवी जूतें प्रगट भए श्री गिरिवर धारी। निरखि नैन आनन्द सिथिल भे हरिचन्द बलि हारी॥१॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाल लीला

आसावरी॥ आजु लख्यो आंगन में खेलत जसुदा जू को बारो री॥ पीत झंगुलिया तनक चौतनी मन हरि लेत दुलारो री। अति सुकुमारि चन्दसे मुखपै तनक डिठौना दीनो री। मानहु श्याम कमल पै इक अलि बैठोहै रंग भीनो री। उर बघनहा बिराजत सखिरी उपमा नाहिं कहि आवैरी। मनु फूली अगस्त की कलिका शोभा अतिहि बढ़ावैरी। छोटी छोटी सीस लटुरिया अमरावलि जनु आई री। तैसी तनक कुल्हइ या तापै देखत अति सुखदाई री। क्षुद्र घंटिका कटि में सोहत शोभा परम रसा लारी। मनहु भवन सुन्दरता को लखि बांधी बन्दन माला री॥ पीत झंगा अति तन पै राजत उपमा यह बनि आई री। मनु घन में दामिनि लपटानी छबि कछु बरनिन जाई री। कोटि काम अभिराम रूप लखि अपनो तन मन वारे री। हरीचन्द ब्रज चन्द चरन रज लेत बलैया हारे री॥१॥

बधाई

सारंग॥ आनंद सागर आज उमड़ि चल्यो प्रगटे ब्रज में आइ कन्हाई। नाचत ग्वाल करत कौतूहल हेरी देत करि नन्द दुहाई। छिरकत गोपी गोप सबै मिलि गावत मंगल चार बधाई। आनन्द भरे देत कर तारी लखि सुरगन कुसुमनि झरि लाई। दान देत सनमानि नन्द जू अति हुलास कछु बरनिन जाई। हरीचन्द जन जानि आपनो टेरि देत सब बहुत बधाई॥२॥

तथा॥ आजु ब्रज होत कोलाहल भारी॥ नन्द राय घर मोहन प्रगटे भक्तन के सुख कारी। जित तित ते धाई टीको लै अति आकुल ब्रज नारी। निरखन कारन श्याम नवल ससि उमगीं सजि सारी। गावत गोप चोप भरि नाचत दै दै के कर तारी। बाजे बजन उड़त दधि माखन छीर मनहु घन वारी। दान देत नन्द राय उमंगि रस रतन धेनु विस्तारी।

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरीचन्द सो निरखि परम सुख देत आपन पो वारी ॥ २ ॥ ॥ १ ॥

दानलीला

टोड़ी॥ ऐसी नहिं कीजे लाल देखत सब ब्रज की बाल काहे हरि-गये आज बहुतहि इतराई॥ सूधे क्यौंन दान लेउ अंचरा मेरो छांड़ि देव जामें मेरी लाज रहै करो सो उपाई। जानत ब्रज प्रीति सबै-औरहू हसैंगे अबै गोकुल के लोग होत बड़ेई चवाई। हरीचन्द-गुप्त प्रीति बरसत अति रस की रीति ने कहू जो जाने कोउ प्रगटत रस जाई॥ १॥

नित्य

यथारुचि॥ आजु महा मंगल भयो भोर। प्रान नाथ भेटे मारगमें चितयो प्रेम भरी दृग कोर। करौं निछावरि प्राण जीवन धन तनकहि निरखत भौंह मरोर। श्यामस्वरूप सुधारस सानी बानी बोलत नन्द किशोर। कोटि काम लावण्य मनोहर माखन मन तनधन को चोर। नेह भयो सब अंग सलोनो आनंद रस भीनो प्रति पोर॥ सिद्धि होयगो सिगरो कारज प्रातहि मिल्यो प्रान पिय मोर। हरीचन्द युग युग चिरजीवो मांगत ग्वलिनि आंचर छोर॥ २॥

श्री स्वामिनीजी की बधाई

परज॥ एरी आज बाजे छे रंग बधावना॥ कीरति उदर उदय-गिरि प्रगट्यो अद्भुत चन्द सोहावना। आजु सुफल भयो नन्द महोत्सव नर नारी मिलि गावना। हरीचन्द वृषभानु बबा सौं प्रेम-बधायो पावना॥ १॥

हिंडोरा

परज॥ एरी आज फूले छे स्याम हिंडोरैं। वृन्दावनरी सघन कुंज में यमुना जी लेतां हलोरैं। संग प्यारे वृषभाननन्दिनी सोहे-छे रंग गोरे। हरीचन्द जीवन धन वारी मुख लखती चित चोरैं॥ १॥

रथयात्रा

सारंग॥ कुंज कुंज रथ डोलै मदन मोहन जू को सेत धुजा तामें-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उड़ि उड़ि सोहे। तैसोई सघन घन छाय रह्यो नभ बीच। देखत ही मन मथ मन मोहै। दौरत में फर हरत पीताम्बर मनु दामिनि घन नाचै। सेत धुजा बग पाँति छवि कछु कहिनि जात निरखत अति मन आनन्द राचै। द्रुम द्रुम कुंज कुंज बन बन तीर नीर घूमत रथ फिरि आवै। हरीचन्द बलि जाय छवि देखि सुख पाय तन मन धन सब वारि कै लुटावै॥१॥

मकर संक्रान्ति

टोडी॥ करत दोउ गृहि हित खिचरी दान। जामें सदा मिले रहैं ऐसेहि गोर श्याम सुख खान। चित्र वस्त्र धरि परम नेह सों जोरि पान सों पानं सों पान॥ ।हरीचन्द त्योहार मनावत सखिजन वारत प्रान॥१॥

दीनता

यथा रुचि॥ कहुरे श्री वल्लभ राज कुमार। दीन उधारन आरत नासन प्रगट कृष्ण अवतार। काहे भरमायो डोलत मनसा धन करत हजार। यह भव रुज क्यौं हू नहिं जैहैं बिना चरन उपचार। कौन पतित सो नेम निबहि है जो बहु अघ आगार। श्रुति पुराण कछु कामन ऐहैं यह तोहि कहत पुकार। बुरे दिनन को साथी कोउ नहिं मात पिता परिवार। हरीचन्द तासों बिट्ठल भजु यहै अहै श्रुतिसार॥२॥

तथा॥ करनी करुणासिंधु की कापै कहि जाइ। अति उदार गुणगन भरे गोवरधन राई। तनिक तुलसि दल के दिये तेहि बहु करि मानैं। सेवा लघु निज दास की पर बत सी जानैं। अजा मेल सुत आपनो तुव नाम पुकार्‌यो। ताको अघ सब दूरि कै तुम तुरत उबार्‌यो। कहा व्याध गजराज सौं करनी बनि आई। कहा गीध गणिका कियो तार्‌यो तुम धाई। कहा कपिन को रूप है का गुण बड़ि आई। तिन सौं बोले बंधु से ऐसी करुणाई। कहा कपिन को रूप है कहँ त्रिभुवन स्वामी। ताकी अग्र भुज सारखी किये चरण गुलामी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहां ग्वाल औ ग्वालिनी करनी की पूरी। जिन के संग बनमैं फिरे हरि करत मंजूरी। ब्रज के मृग खग भीलनी तृन वीरुध जेते। बंधु सरिस माने सबै करुणा निधि तेते। कहां अधम अघ सो भयो हरिचन्द भिखारी। जिहि माधौ सह जहि लियो गहि बांह उबारी॥१॥

ग्रीसम ऋतु

सारंग॥ केसर खौर श्याम सुन्दर तन निरखत सब मन मोहैं। मनु तमाल में चम्पक बेली लपटि रही अति सोहै। मनु घन मे दामिनि लपटानी उपमा को कवि कोहै। हरीचन्द बनते बनि आवत ब्रज त्रिय मुख छबि जोहे॥१॥

प्रबोधिनी

यथा॥ कुंजन मंगल चारु सवांरी। थापे दीनें कलस बधाए तोरन बांधी द्वार। गावत सबै सोहाग छबीली मिलि सब ब्रज की बाम। बन्ना बनि आयो नंन्द नन्दन मोहन कोटिक काम। रंग रंगीली बोड़ी चढ़िके सिहरो सोहत सीस। देत असीस सासुरे की सब जीओ कोटि बरीस। बन्ना बहू पास बैठारी जोरि गांठ इक साथ। हरीचन्द को देत बधाई दुलहिन अपने हाथ॥१॥

दीपावली

रेमन- कबिन सों सांचेहि चूक परी। दीप सिखा की उपमा जिन तुलि प्यारी हेत धरी। वह दाहत यह अंग जुड़ावति वह चंचल थिर यह। वह निज प्रेमिन परम दुखद यह सदा सुखद पिय देह। वरसें धूम स्यच्छ अति ही यह रैन दिना इक रास। वह परि छिद्र ओर वस यह निज रूप सर्दत्र प्रकाश। वह सनेह आधीन और के यह सनेह भर पूर। हरीचन्द दीपक प्यारी की नहिं कोउ विधि सम तूर॥१॥

राग बसन्त

कहो कहो पिय प्यारे कित तुम आजु वसन्त मनायं। कौन को दियो सुहागराज तुम कित रहि गये लुभाये॥१॥ केसर चरचित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चारु कपोलन पीक छाप अति सोहै। नैन गुलाल भरा बरो वागे दे-खन ही मन मोहे॥२॥ सिथिलित पाग माल कुम्हिलानी स्वेद सुगंधन सानी। धन धन भाग आजु ताके जो आन पिया मन मानी॥३॥ आवो प्यारे रसिक बिहारी मेरेहू उर लागो। हरो पीर मेरेहू उरकी इतही छिन अनुरागो॥४॥ तुम कहं जदपि एकही सी सब बहुत-किनबल किसोरी। पै हमको तो प्रानन सों बढ़ि तुम तुमही सो होरी॥५॥ हम हूं जिय की साध बुझावैं पिय यहि करत लपटाई। तनिक नैन भरि चितवनि ही में कोटि स्वर्ग सुख पावैं॥६॥ प्यारे तुम चाहो कि-न चाहो हमहि नाहिं गनि दूजी। सर बस छांड़ि मीत रहि हैं हम तुम पद पंकज पूजी॥७॥ हमरे तन मन धन सर बस तुम तुमहीं सों सबहि बड़ाई। सपनहुं तुम कहं जो बहु नायक जानें ताहि दुहाई॥८॥ ला-खन तिय संग केलि करो तुम मोहिं यामें सुख भारी। मो सुहाग बल होहि जगत में कोटि सुहागिनि नारी॥९॥ मेरे पिय सों जग सुख पा-ओ करो सबहि मन भायो। हरिचन्द अपनो पीतम में भाग न ऐसो पा-यो॥१०॥१॥

बसन्त

खेलत बसन्त राधा गोपाल॥ इत ब्रज बाला उत ग्वाल बाल॥५०॥ गावत बहार दे बिबिधि ताल॥ बाजत मृदंग आवज रसाल॥ तहं उड़त बिबिध बुक्का गुलाल॥ गारी दे दे बहु करत ख्याल॥ बाढ़ी सोभा अति तेन काल॥ हरिचन्द निरखि हरखित बिसाल॥२॥

दीनता

यथा रुचि॥ गुन गन बिट्ठल नाथ के कहं लग कोउ गावै। अमित महिम लघु बुद्धि सों कछु कहत न आवै। दैवी जन अपने किए क-लि जीव उबारे। माया तिमिर मिटाइ के खल कोटि उधारे। अंगीक-त जाको कियो ताको नहिं त्याग्यो। अपराधहि मान्यो नहीं भक्तन अनुराग्यो॥ सरन परो त्रय ताप को भेट्यो छन माहीं॥ हरीचन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की गहि भुजा यामें सक नाहीं॥१॥

तथा

बिहाग॥ गावत गोपी कोकिल बानी। श्री ब्रषभानु राज से राजा कीरति सी जा की पट रानी। गावत सारद नारद सुक मुनि सनकादिक ऋषि जानी। गावत चारिहु बेद शास्त्र षट कहि कहि कै कछु थक थक हानी। गावत गुन अज ब्यासादिक शिव गीत परम रस मानी। मन क्रम बचन दास दरशन को गावत हरीचन्द सुखदानी॥१॥

बधाई

बिहाग॥ गावत रंग बधाई सब मिलि गावत रंग बधाई। कीरति के प्रगटी श्री राधा मोहन के मन भाई। नर नारी सब मिलि के आईं गावत गीत सुहाई। हरीचन्द कछु जस बरनन करि बहुत निछावरि पाई॥१॥

तथा

राइसा॥ गाओ सखि मंगल चार बधायो ब्रषभानु को। सुनी चलीं गृह गृह तैं साजनि सबै सजाय। बरनि छबि कछु कहि न आवै चन्द उद्यो आइ। भयो अति आनन्द तेहि छन कह्यो कापै जाय। ग्वार नाचैं तार दै दै देत बहुत बनाय। एक गावत एक नावत एक परसत पाय। गारि देत दिवाइ सब को सुख कह्यो नहिं जाय। देत सब कोऊ बधाई रतन बसन लुटाय। रंक भये कुबेर मानहुं दान पाइ अघाय। भयो जौन अनन्द तेहि छिन कौन पै कहि जाय। हरीचन्दहि बहुत दीनो दान तहां बुलाय॥२॥

तथा

सारंग॥ ग्वाल सब हेरी हेरी बोलैं। कीरति के घर कन्या जाई यह मुख सों कहि डोलैं। आनंद मगन गनत नहिं काहू मार दही के रोलैं। हरीचन्द को देत बधाई भक्ति रतन मन मोलैं॥१॥

तथा॥ गावत सबै बधाय धाय। आनंद भरे करत कौतूहल बहु

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

راگ سنگرہ-۲۱

बाद्यंत्र बजाय जाय। गोपी आई मंगल करलै कुम कुम मुखन लगा-य गाय। श्री मुख लखि आनन्द न सबहीं नैनन रही बलाय लाय। हगावल गली सुगंधिन छिरकीं बहु विधि लसन बिछाय छाय। हरीचन्द शोभा लखि सुर नभ तिय सह रहे लुभाय भाय॥१॥

हिंडोला

परज॥ गिरधर लाल हिंडोरैं झूलैं। पच रँग फूल हिंडोर बनायो निरखि निरखि जिय फूलैं। को कहि सकै भई जो शोभा कालिन्दी के कूलैं। हरीचन्द यह कौतुक लखि के देव बिमाननि भूलैं॥१॥

दान लीला

सारंग॥ ग्वालिनि दै किन गोरस दान। करुन पुन्य यह गोवरधन गिरि तीरथ सौं बढ़ि मान। गहन चिकुर मुख पूरन बिधु पै छाया सम लखु आन। बड़ो परब तुव भाग मिल्यो है करुन बिलम्ब सुजान॥ सिसुता पूरि प्रगट प्रति पद नव यौबन संधि समान॥ हरीचन्द कंचन अंगन दै हरि सुपात्र पहि दान॥१॥

श्री ठाकुर जी की बधाई

यथा रुचि॥ गोकुल प्रगटे गोकुल नाथ। प्रमुदित लता गोवरधन यमुना सब ब्रज बासी किये सनाथ। इक गावत इक ताल बजावत इक नाचत गहि गहि के हाथ। एक बसन पट देत बधाई इक लावत घसि चन्दन माथ। आनंद उमगे गनत न काहू बाल बिरध सब एकहि साथ। हरीचन्द सुर फूलन बरषत शुक नारद गावत गुनगाथ॥१॥

श्री स्वामिनी जी की बधाई

परज॥ घर घर आजु बधाई बाजै। टीको लै आवति ब्रज बनिता कीरति को घर राजै। इक गावत इक करत कोलाहल मनु मायो है गाजै। हरीचन्द छबि कहि नहिं आवै कवि मति या थल लाजै॥१॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बर्षा

मलार ॥ घिरि घिरि घोर घमक घन धाये । बरसत बारि बड़ी बड़ि-
बूंदन ब्रज मण्डल पर छाये ॥ १ ॥ दादुर बक पिक मोर पपीहा चा-
त्रिक सोर मचाये ॥ दामिनि दमकति दसहु दिसा सौं बहु खदो-
त चमकाये ॥ २ ॥ कुसुमित कुंज कुन्द की कलिका केतकि कद-
म सुहाए ॥ हरीचन्द हरिचन्द बदन छबि लखि रतिकाम लजाए ॥ ३ ॥

असीस

यथारुचि ॥ चिरजीवो यह जोरी युग युग चिरजीवो यह जोरी ॥
श्री यशुदा नन्दन मनमोहन श्री वृषभान किशोरी ॥ ध्रु० ॥ नित नित
ब्याह नित्य ही मंगल नित नित सुख अति होई ॥ श्री बृन्दाबन सु-
ख सागर को समुद्र पार न पावे कोई ॥ १ ॥ एक रूप दोउ एक ब-
यस दोउ दोऊ चन्द चकोर ॥ हरीचन्द जब लौं शशि सूरज तब
लौं जीयो जोर ॥ २ ॥

तथा ॥ चिरजीवो मेरो श्री वल्लभ कुल । माया मत खर तिमिर
दिवाकर प्रेम अमृत मय रस सागर पुल । कलि खल गन बल ह-
रख रसिक जन शरन करन बिरहिन बिरहा कुल । हरीचन्द दैवी ज-
न प्रिय तम पतित उधारन महिमा अन तुल ॥ १ ॥

ब्याहुला

यथारुचि ॥ चलो सखि मिलि देखन जैये दुलहिनि राधा गोरी
जू । कोटि रमा मुख छबि पै वारौं मेरी नवल किशोरी जू ॥ घघरी
लाल जर कसी सारी सौंधे भीनी चोली जू । सर बट मुख में सिर पै
मोरी मेरी दुलहिया भोली जू । नक बेसर कन फूल बन्यो है छ-
बि कापैं कहि आवे जू । अनवट बिरिया मुंदरी पहुंची दूलह के म-
न भावे जू ॥ ऐसे बना बनी पैं री सखि अपनो तन मन वारी जू । स-
ब सखियाँ मिलि मंगल गावत हरीचन्द बलिहारी जू ॥ १ ॥

6581.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री स्वामिनी जीकी बधाई

चलीं बधाई गावन के हित सुन्दर ब्रज की नारी। अंचल उड़त हंसगति चंचल कर लै मंगल थारी। पीत बसन कटि कसत रसन छबि रसनि कहौं किमि गाई॥ दामिनि मैं सन्ध्या घन तापैं फिरि दामिनि लपटाई। नूपुर रुनित कुनित कंकनकर हार चुरी मिलि बाजे। मनु आनँद भरि सब तन भूषण गाजत साजत राजे। चौमुख चारु दीप थालन पर मंगल साज सजाई। मनहुं सनाल कमल पर कमला कनकलता चढ़ि धाई। धावत खसत सुमन बेनी तें उपमा कहं कवि हारैं। मनु कोमल पग गोनि चुकर गन फूल पाँवड़े डारैं। ऊंचे सुर गावत छवि छावत बरसावत रसभाई॥ इक सों इक बढ़ि अतिहि उताइल कीरति मंदिर आई। निरखत मुख सुख अति हिय बाढ़्यो वारि सुनत मन दीनो। आजु सखी नंद के घर को सुख सांच बिधाता कीनो। नाचत मुदित करत कौतूहल गावत दै कर तारी। हरीचन्द आनँद मैं आनँद युगल इकत्र निहारी॥१॥

श्री चंद्रावली जीकी बधाई

यथा रुचि॥ चन्द्रभानु घर बजत बधाई। श्री चन्द्रावलि ब्रज प्रगटाई। हरित भये तरु पल्लव शोभा। कुंज भवन बाढ़ी अति शोभा। बोलि उठे कल कोकिल कीरा। डोलो तिहि छन त्रिविधि समीरा। उनए घन मनु आनँद छायो। गरजि मन्द दुन्दुभी बजायो। भादौं सित पंचमी सुहाई। स्वाती सोम प्रहर निसि आई। चन्द्र कला की कोश सिरानी। चंद्रावलि प्रगटी सुख दानी। गुप्त भेद नहिं कछु प्रगटायो। सो श्री विट्ठल प्रगट लखायो। रूप प्रगट छबि नैन निहारी। हरीचन्द सरबस बलिहारी॥१॥

ढाढ़ी

यथा रुचि॥ चलो आज घर नन्द महर के प्रेम बधाई गावैं। भादौं कृस्न अष्टमी दिन श्री कृस्नचंद्र यश गावैं॥ तोरन तनी पताका द्वारन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भवन भरि भई भारी। री द्वादिन कर मगन समेटे चलियो भवन म-झारी। जहाँ इंद्र चंद्रादि देवता कर बन्दे हैं ठाढ़े। कौन सुनै गो आ-ज हमारी प्यारी कर हित गाढ़े। प्रेम पंथ को पग है न्यारो तातें मन य-ह आवै। हरीचन्द लखि लाल लड़इतो नव निधि सिधि सिधि पावै॥१॥

बिहार

केदारा॥ चले दोउ हिलि मिलि दै गल बाहीं। फैली घटा चहूँ दि-शि सुन्दर कुंजन की पर छाहीं। अपने कर सों पिय श्रम जल पोंछत। प्यारी कहत नाहीं नाहीं। हरीचन्द बिजन डोलावत श्रम लखि बिधि-हरि आदि सिहाहीं॥१॥

रथ यात्रा

सारंग॥ चारु चल चक्र चित्रित विचित्रित परम जगत विजयी जयति कृष्ण को जैत्र रथ। अति तरल तर बलाहक शैब्य सुग्रीव मणि पुष्प तुरंग योजित। चलत पथ सुपथ॥ फरहरत धुज उड़त नव पताका परम कलस कल इंद्र सम सकल चमकत अकथ॥ चक्र तापर रह्यौ तासु तल वायु सुत विनत विनता सुअन गरजि अरि करत हथ। खंभ कूबर छत्र चारु डाँड़ी। चारु विविध मनि जटित उघटित वेद शब्द कथ। झाँझ मान कत करत घोर घंटा घहरि घने घुंघरू घिरत फिरत मिलि एक जथ। झुरवी सूरज सु-खी सुखी लखि जन दुखी दैत्य दल झल मलत झालरन मुक्त तथ। बैठि दारुक तदारुक करत अश्वको चलत मन बेग सम बेग गति शब्द नथ। देव ऋषि करत जय शब्द सुर छल दुरत मूल बंदी बिरद कहत बहु भाँति गथ। थकित हरिचन्द दृग सरस शोभा निरखि हरखि सुमन बरखि लखी चारों अरथ॥१॥

बाल लीला

यथा रुचि॥ छोटोसो मोहन लाल छोटे छोटे ग्वाल बाल छोटी छो-टी चौतनी सिरन पर सोहैं। छोटे छोटे भँवरा चकई छोटी छोटी लिये छोटे छोटे हाथन सों खेलैं मन मोहैं। छोटे छोटे चरन सों चलत

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घुंइरू चन बढ़ीं ब्रज बाल छोटी छोटी छबि जो हैं। हरीचन्द छोटे छोटे कर मैं माखन लिए उपमा दर निसकें ऐसे कवि को हैं॥ १॥

दान लीला

टोड़ी॥ छांड़ो मेरी बहियाँ लाल सीखी यह कौन चाल हाहा तुम परसत तन औरन की नारी। चुरी मेरी मुरुक गई परसत तन पीर भई॥ भीर भई देखत सब ठाढ़ी ब्रज नारी॥ बाट परी ऐसी बात मोहिं तो नहीं सोहात काहे इतरात करत अपनो हठ भारी। हरीचन्द लेहु दान नाहीं तो परैगी जान नेक करो लाज छांड़ो चंचल गिर धारी॥ २॥

आशीष

बिहाग॥ जुग जुग जीवो मेरी प्रान प्यारी राधा। जब लौं यमुन जल रवि शशि नभ थल तब लौं सुहाग लहो सुयश अगाधा॥ नित नित रूप बाढ़ो परस पर प्रेम गाढ़ो नवल बिहार करि हरो जन बाधा॥ हरिचंद दै आशीष कहत जियो लख बरीस तुम्हरे प्रगट भये पूरी सब साधा॥ ३॥

दीपावली

यथारुचि॥ यमुन जल बढ़ी दीप छबि भारी॥ ध्रु०॥ प्रति बिंबित प्रति बिंबन इत प्रति तहँ राजत पिय प्यारी॥ १॥ तैसी हीन भतर तारावलि तरल बायु गुन होई। तैसेहि उड़त गगन गुब्बारे छुटत दारु पति जोई॥ २॥ अवनि नीर आकाश प्रकाशित दीपहि दीप लखाई। मनु ब्रज मराडल जोति रूप ता अपुनी प्रगट दिखाई॥ ३॥ सुख प्रकाश रंजित सबही थल सो भा नहिं कहि जाई॥ हरीचन्द राधे मन मोहन रहे तेवहां रम नाई॥ ४॥

गणेश चतुर्थी को पद

राग यथा रुचि॥ जैजै गोपी गणेश वृन्दावन चिंता मणि ऋद्धि सिद्धि दायक ब्रज नारि प्रान प्यारे॥ वनिता कुच मोदक गहि बार बार केलि करत प्रिया बेनी का भुजंग हस्त कंज धारे। मान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सबै पर प्रासत अंकु सादि चिन्ह लसत हंसत हंसत अभय वरद प-
रम प्रान के रखवारे ॥ सुंड दराड बाहु मेलि करिनि संग सुगज केलि-
करत हैं हरिचन्द निरखि हरखि प्रान वारे ॥ २ ॥

नित्य

बिहाग ॥ जय श्री मोहन प्रान प्रिये ॥ ध्रु० ॥ श्री वृषभानु नंदिनी-
राधे ब्रज कुल तिलक त्रिये ॥ १ ॥ जापद रज शिव अज बंदत नित-
लल चत रहत हिये ॥ २ ॥ तिन हरि संग बिहरत निशंक निस दिन-
गल बांह दिये ॥ ३ ॥ जा मुखचन्द मरीच देखि सब ब्रज नर नारि-
जिये ॥ ४ ॥ तिनकी जीवन मूरि होइ कै सहजेहि स्ववस किये ॥ ५ ॥
इन्दा दिक दिकपति जाके डर बरतन रखहि लिये ॥ ६ ॥ हरीचन्द-
सो मान जासु लखि सहजहि बहुत भिये ॥ ७ ॥

बन्दना

बसन्त ॥ जै वृषभानु नंदिनी राधे मोहन प्रान पियारी । जै श्री रसि-
क कुंवर नंद नन्दन मोहन गिर वरधारी ॥ १ ॥ जै श्री कुंज नाइ का-
जै जै कीरति कुल उजियारी ॥ जै वृन्दावन चारु चंद्रमा कोटि मदन
मद हारी ॥ २ ॥ जै ब्रज तरुन तरुनि चूड़ा मनि सखियन मैं सुकुमारी ॥
जयति गोप कुल शीश मुकुट मनि नित्य सत्य बिहारी ॥ ३ ॥ जयति-
बसन्त जयति वृन्दावन जयति खेल सुख कारी । जय अद्भुत यश-
गावत ही शुक मुनि हरिचन्द बलिहारी ॥ ४ ॥

स्फुट

सखा रुचि ॥ जुरे हैं फूटे ही सब लोग ॥ जैसे स्वामी परिकार तैसे ते-
सोही संयोग ॥ ध्रु० ॥ बैठो दीना नाथ कहाए करि इत उत कछु काज ॥
एक एक की लाख इन्होंने गाई तजि के लाज ॥ १ ॥ जुरे सिद्ध सा-
धक ठगियारे बड़ो जाल फैला यो ॥ मूढ़ो जिन्हें मिटायो तिन-
को जग सो नास धरायो ॥ २ ॥ आजु नाहिं तो कलया प्रासा ही मैं-

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दीनहिं राख्यो ॥ हरीचंद मन ले निर मोहिन स्वेत कुसम नहिं भा-ख्यो ॥३॥

दीनता

देव गन्धार ॥ जोपै श्री वल्लभ सुत नहिं जान्यो। कहा भयो साधन अनेक मैं करि कै वृथा भुलान्यो। बाद रसिक ता अरु चतुराई जौ यह जीवन जान्यो। भयो वृथा विषया रस लम्पट कठिन कर्म मैं सान्यो। सोइ पुनीत प्रीति जेहि इनसों वृथा वेद मथि छान्यो। हरीचन्द श्री विट्ठल बिन सब जगत झूठ करि मान्यो ॥१॥

तथा

आसावरी ॥ जे जन अनन्य आसरो तज श्री विट्ठल नाथहि गावैं। ते-बिन श्रम धारिहि साधन मैं भव सागर तरि जावैं। जिन के मात पिता गुरु विट्ठल और कहूं कोउ नाहीं। ते जन यह संसार समुद्रहि वत्स-खुर सम जाहीं। जिनके श्रवण कीर तन सुमिरन विट्ठल ही को भावै। ते जन जीवन मुक्त कहावैहिं सुख देखे अघ जावै। जिनके इष्ट सखा श्री विट्ठल-और बात नहिं प्यारी। तिनके बस मैं सदा सर्वदा रहत गोवरधन धारी। जिन मन का-य करम बच सब विधि श्री विट्ठल पद पूजो। ते कृत कृत्य धन्य ते कलि मैं तिन सम और न दूजो। जो निशि दिन श्री विट्ठल विट्ठल विट्ठल ही मुख भावैं। हरीचन्द तिनके पद की रज हम अपने सिर लावैं ॥२॥ तथा

यथा रुचि ॥ जन सों कबहूं नाहिं चली। सदा सर्व्वदा हारत आये मानत बात भली। कहां किया तुम बलि राजा सों चतुराई न चली। बांधत गये बधाइ आपुही व्यर्थ बने छली। भीषम ने पर तिज्ञा टारी चक्र गहायो हाथ। अरजुन को रथ हांकत डोले बन मैं लीने साथ। यशुमति जू सों हाथ बंधायो नाचे माखन काज। मैं रिनिया तुमरो गोपिन सों कह्यो त्यागि कै लाज। रिन बहु जानि छाड़ि के गोकुल भागे मथुरा जाय। सदा सर्व्वदा हारत आये भक्तन सों ब्रजराय। हमसो हूं हहपत ही बनिहै क बहूं नजैहैं जीत। तासों तारो हरीचन्द को मानि पुरानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीति ॥१॥

दीप दान

यथा रुचि ॥ यमुन जल बढ़ी दीप छवि भारी । प्रति बिम्बित प्रति बिंब लहरि प्रति तहँ राजत पिय प्यारी । तैसी ही नभ तट तारावलि तरल वायु गुन होई । तैसेहि उड़त गगन गुब्बारे छुटत दारु गति जोई । अवनि नीर आकाश प्रकाशित दीपहि दीप लखाई । मनु ब्रज मण्डल जोति रूपता अपनी प्रगट दिखाई । सुख प्रकाश रंजित सबही थल शोभा नहिं कहि जाई । हरीचन्द राधे मन मोहन रहे त्यों हार मनाई ॥१॥

बधाई

राग कान्हरा ॥ जो पै श्री राधा रूप न धरतीं । प्रेम पंथ जग प्रगट न होतो ब्रज बनिता कहा करतीं । श्रुति मार्ग थापित को करतो ब्रज रहतो सब सूनो । हरिलीला काके संग करते मंडल होतो ऊनो । रास मध्य को रमतो हरि संग रसिक सुकवि कहा गाते । हरीचन्द भव के भय सों भजि किहि के शरन नहिं जाते ॥१॥ २ ॥ जै जै जै जै जै श्री-राधा । जबते प्रगट भई बरसाने नाशी जन के तन की बाधा । सब सखियां नन्दित मनमें अति चरन कमल अवराधा । हरीचन्द ब्रज चन्द पिया को प्रेम पंथ जिन साधा ॥१॥

बधाई

तथा ॥ यशोदा माई लेहु हमारी बधाई । धन्य भाग तेरे सुनि प्यारी जनम्यो कुवँर कन्हाई । चिरजीवो जबलौं यमुना जल गंगा जल सब देवा । जबलौं धरा अकाश और हैं जब लौं हरि की सेवा । तब लौं चिरजीवो जग भीतर हरीचन्द तव लाला । मंगल गीत बिनोद मोद मनि मंगल होइ रसाला ॥१॥

श्री राम नौमी वा दशहरा को कीर्तन

सारंग ॥ जयति राम अभिराम छबि धाम पूरन काम श्याम बपु बाम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खल तस्कारी। पुनि चंड की दंड बल खंड कृत दनुज बल अनुज सह सहज शुभ रूप धारी। रघु कुल अनल बल प्रबल पर्जन्य सम धन्य द्विज जन पक्ष रक्षकारी। अवध भूषण समर विजित दूषण दुष्ट विगत दूषण चतुर धर्म चारी। खर प्रखर खर अग्नि लंक दृढ़ दुर्ग दल दलमलन बाहु मारीच मारी। दे श्रवण अनुज धट श्रवण रावण शमन शरणागत भय दमन हरिचन्द वारी॥१॥

जगाने के पद

जागो मेरे प्राण पियारे। चलि चलि गईं दिखाओ शशि मुख उदो जगत उजियारे। मेटहु बिरह ताप दरशन दै बोलहु मधुरे बैन। आलस भरे रैन रँग राते खोलहु पंकज नैन। मेरे सर बस जीवन माधो प्रात भयो बलि जागो। कछु अलसाइ जँभाइ मंद हँसि हरीचन्द गर लागो॥१॥

प्रबोधनी के पद

यथारुचि॥ जागो मंगल मूरति गोबिंद बिनय करत सब देव। तुव सोए सबही जग सोयो लखहु न अपनो भेव॥ बन्दी बेद खरे सब गावत अस्तुति करत जुहारी। नारद सारद बीन बजावत जय जय बचन उचारी॥ किन्नर अरु गंधर्व अप्सरा तुम रो ही यश गावैं। बाजन बिबिध बजाइ तुम्हे सब करि मनुहार जगावैं॥ जगके मंगल काज होत नहिं बिनु तुव उठे कृपाल। तुव जागे सबही जग जागत तासों उठहु दयाल॥ निद्रा तजहु रमा पति के शव चहुँ दिशि मंगल मचै। पंकज नयन बिलोकि बिमल यश हरीचन्द हूँ बँचै॥१॥

हिंडोला॥ झूलत हैं राधिका श्याम संगन बरंग सुखदहिं डोरे। गावत मल्ल बराग रस भरे तान मान मधुरे सर जोरे। इत गिरही ब्रज नारि नवेली पचरंग चीर पहिरि चित चोरे। पचरंग छबि रस युगल माधुरी कहि नि जाइ श्याम लगे गोरे। बरषत मंद मंद घन तेहि छन पंचरंग बादर सब सुख बोरे। हरीचन्द वृष भांनुनंदनी कोटिन शशि छबि छिन महँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छोरे

हिंडोला

रागसा ॥ झूलत राधा रंग भरी कुंजहिं डोरे आज ॥ संग सब सखी सुहावनी साजे सुन्दर साज ॥ १ ॥ झूलन आये मोहन सुन्दर मदन मुरारी ॥ गावत ऊंचे सुर भरि संग मिलि ब्रजकी नारी ॥ २ ॥ ताल मुरज डफ आवज साथ परवावज चंग ॥ बाजत लय सुर साजत बीना और उपंग ॥ ३ ॥ बिच बिच बंशी गूजत मधुर मधुर घन घोर । धुनि सुनि जासु कोइ लियन तरुन मचाई रोर ॥ ४ ॥ इक उतरत इक झूलत एक चढ़त नहं धाय ॥ एक रहत गहि डोरी दूजी देत झुलाइ ॥ ५ ॥ इक नाचत इक गावत एक बजावत तार ॥ एक युगल छबि लखि के तन मन डारत वारि ॥ ६ ॥ रस कनि में रंग बाढ्यो छबि कछु कही न जाइ ॥ झोटा लागि रहे डारन विविध बसन फहराइ ॥ ७ ॥ शोभा को कहि भाषै झूलत बाढ़ो जौन । हरीचन्द लखि लखि के कवि मति रसना मौन ॥ ८ ॥

ग्रीष्म ऋतु

झीनो पिछौरा सोहै आजु अति झीनो पिछौरा सोहै ॥ चन्दन लेप नन्दनन्दन तन देखत ही मन मोहै । पारिजात मंदार रही लसि फूल छरी कर लीन्हे । सांझ समय बनते बनि आवत गोधन आगे कीन्हे । गोरज छुरित अलक सब सुन्दर ब्रजबालन दरशायो । हरीचन्द मुख चन्द देखि के बासर ताप नसायो ॥ १ ॥

नित्य

सोरठ ॥ ठाढ़े हरि तरनि तनया तीर । संग श्री कीरति कुमारी पहिरि झीने चीर । उरनि फूलनि माल औंधे भंवर गन की भीर । हाथ कमल लिये फिरावत राधिका बलबीर । सांझ समय सोहावनो अति बहत त्रिविधि समीर । वारने हरिचन्द छबि लखि श्याम गौर शरीर ॥ १ ॥

धमार

सिंदूरा ॥ देकाया ब्रज को तेरे माथे कौने दयो । जो तू लंगर ढीठ उपाधी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऊधम रूपथो ॥ काहु न डरत करत मन की नित गनत रंग नयो ॥ हरी चन्द ब्रज डगर डगर बद नामी लीज बयो ॥ २ ॥

दीपावली

यथारुचि ॥ तुव बिनु पिय को घर अँधियारो ॥ ध्रु० ॥ यदपि बहूं दिसि प्रगटि स्वास मद बिरहा नल संचारो ॥ १ ॥ कछु न लखात नाहि ग्राति व्याकुल हग भर लावत भारो ॥ २ ॥ प्रिये प्रिये कहि प्रति को ननमें ढूंढ़ि रहत घर सारो ॥ ३ ॥ तू इत बैठी बदन बनाये उन वह विकल विचारो ४ ॥ हरीचन्द उति चलिरी प्यारी लौंउ गरे पिय प्यारो ॥ ५ ॥

दीनता

यथारुचि ॥ तुम सम नाथ और को करि है ॥ ध्रु० ॥ हम से हीन दीन जन हूं ये कौन कृपा बिस तरि है ॥ १ ॥ को निज बिरुद सम्हारन कारन दौरि दीन दुख हरि है ॥ २ ॥ जानि क्षुधित हरिचन्द अधम को भेजि सुधा परि हरि है ॥ ३ ॥

तथा

तथा ॥ तुम्हे तो पति ननही में प्रीति ॥ लो कहु वेद बिरुद्ध चलाई क्यों यह उलटी रीति ॥ धृ० ॥ सब बिधि जानत हो निश्चय करि तुम सो छिप्यो न नेक ॥ वेद पुरान प्रमान तजन को मेरो यह अविवेक ॥ १ ॥ महा पतित सब धर्म बिबर्जित श्रुति निन्दक अघ खान । मर यादा ते रहित मनस्वी मानत करत सबै मन मान ॥ २ ॥ जानत भए अजान कहो क्यों रहे तेल दै कान ॥ तुम्हें छाड़ि जग को नहिं जो मोहि बिगस्यो करत बखान ॥ ३ ॥ बलिहारी यह रीझ रावरी कहो खुदानी आय ॥ हरीचन्द सो नेह निबाहत हरि कछु कही न जाय ॥ ४ ॥

तथा

तुम्हारो सांचो हम में नेह । कबहूं नाहिं छांड़ि हो हम को दृढ़ व्रत लीन्हों एह । प्रेम सत्य तव और सब मिथ्या यामें कछु न संदेह । हरीचन्द जो याहिन मानै तिन के मुख में खेह ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

راگ سنگرہ - ۳۲

तथा

तुमे तो पतित नहीं सों प्रीति लोकहु वेद विरुद्ध चलाई क्यों यह उलटी रीति। सब विधि जानत हो निश्चय करि तुमतें छिप्यो न नेक। वेद पुरान प्रमान तजन को मेरो यह अवि वेक। महा पतित सब धर्म्म विवर्जित श्रुति निन्दक अघ खान। मरयादा ते रहत सन स्वी करत सदै मन मान। जानत भये अजान कहो क्यों रहे तेल दै कान तुमहिं छोड़ि जग को जो नहिं बिगर्‍यो करत बखान। बलि हारी यह रीझ रावरी कहाँ खुटानी आय। हरीचन्द सों नेह निबाहत हरि कछु कहा न जाय॥१॥

अशीष

कान्हरा॥ तिहारो घर सुबस बसो महारानी। कीरति जू तुमरे घर प्रगटी ब्रज जननी ठकुरानी। जाके भए सकल सुख बरसे जिमि सावन को पानी। अति आनन्द भयो गोधन में हम यह आगम जानी। कोउ गावैं कोउ देत बधाई वेद पढ़त मुनि ज्ञानी। हरीचन्द प्रगटी श्रीराधा मोहन के मन मानी॥१॥

दीनता

यथारुचि॥ नेई धन धनया कलि युग में जिन जाने श्री बिट्ठलनाथ। जीवन जगत सुफल तिनहीं को जौन बिकाने इनके हाथ॥ धरम मूल इक इनकी पदरज इनके दासहि सदा सनाथ। भक्ति सार इनको आराधन इनहीं को गावत श्रुति गाथ॥ इनके बिनु जे जीवत जग में ते सब स्वास लेत जिमि भाथ। हरीचन्द चलु सरन इनहिं के धरि के चरनन पर निज माथ॥१॥

दीपा वली

यथारुचि॥ दीपन उजरी करी सहाय॥ ध्रु०॥ चली गई पिय पास प्रगट मग काहुन परी लखाय॥१॥ अँधियारी में तो भय भारी मुख शशि नाहिं दुराय॥२॥ इत प्रकाश में मिलि अल वेली एक भई चमकाय॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आजु तम्हारी। पटे मंत्रि भान भूधरा एक भये सब आय ॥४॥ हरीचन्द लाल के वियोग तम दीनो तुरतन छाय ॥५॥

सेहरा

यथा रुचि ॥ दूलह श्री ब्रज राज फूलि आजु बैठे न कुंजन ॥ ध्रु० ॥ फूलन को सेहरो फूलनि के अभरन फूलन के सब साजे ॥१॥ फूली सखी गीत गावैं देव फूल बर सावैं फूल्यौ सकल समाज ॥२॥ फूली श्री राधा प्यारी देखि फूली ब्रज नारी हरिचन्द फूल्यो अति आज ॥३॥

दान एकादशी और बावन द्वादशी

दान लेन हैही जन जान्यौ ॥ कै तुम नन्द राय के ढोटा कै बावन जिन बलि छल ठान्यो ॥१॥ तीन पैर कहि छोटे पगसों उन छल करिकै देह बढ़ाई। तुम गोरस के मिस कछु औरे रस लीनो छलिकै ब्रज राई ॥२॥ वे छोटे कपटी तुम खोटे एकहि से विधि रचे सँवारी ॥ हरीचन्द वेतो बावन रहे तुम छप्पन निकसे गिरधारी ॥३॥

दान एकादशी

देखे आजु अनोखे दानी ॥ ध्रु० ॥ जाचक मनमें इती ढिठाई लाल कौन यह बानी ॥१॥ रार करत कै गोरस माँगत सो कछु बात न जानी ॥२॥ हरिचन्द कुल दीपक ढोटा कौन रीति यह ठानी ॥३॥

नित्य

टोड़ी ॥ देखो जू नागर नट ठाढ़ो यमुना के तट पर मग कोउ चलन न पावै। काहू को हरत चीर काहू को गिरावै नीर काहू की ईंडुरी दुरावै ॥ श्याम बरन तन शीश टिपारो सोभा कहि नहिं आवै। हरीचन्द हँसि हँसि नैन नचावत तन मन सबहि चोरावै ॥१॥

मकर संक्रान्ति का और संक्रान्ति के दिन गायबे को पद

राग यथारुचि। द्वुतिय नृप भानु छटी तजु मान। करन चतुर्थ सदा सोतिन हिय छटि पंचमी सुजान। तो सम सातीं नाय और कोउ नव मन ८

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ال سنگھ ۳۴۰

वम नू बाल। तुव बिनु आठ वेदना पावत व्याकुल पिय नन्दलाल। दसम केतु पीड़त पिय कों अति निज दुख अगिनि बढ़ाय। करु अभिसेक अमृत एकादश कुच पिय के हिय लाय। द्वादश बिनु जल तिमि हरि तुव बिन लगत नि प्रथम न नेक। हरीचन्द ह्वै त्रतिय पिया संग करु संक्रमन बिबेक ॥ १ ॥

नित्य

यथा रुचि ॥ दोउ मिलि पोढ़ैं सुख सौं सेज। करत भावती रस की बतियों बाढ़े मदन मजेज। बतियन हीं कछु अन रस ह्वै गयो प्रिया रही करि मान। बोलत नहिं कछु मौन ह्वै रही भौंह युगुल धनु तान ॥ १ ॥ दिपति दिव्य दीपा वली आजु दिपति दिव्य दीपावली। मनु तम नाशकरन को प्रगटी कप्रपुष सुत बंशा वली। मनु ब्रज मण्डल कुल चन्द्रमा तहं तारन की मण्डली। जीतन कों मनु राहु सेन का अति सुबन किरनावली। बिगत भई सब रैनि कालिमा शोभा लागति है भली। हरीचन्द मनु रतन राशि की उज्ज्वल जोति जुगावली ॥ २ ॥

ब्याहुला

यथारुचि ॥ दोउ जन गाँठि जोरि बैठारे। बिहंसत दोउ मुख देखि परस्पर चितवत होत सुखारे। दूलह दुलहिन को अनन्द लखि बाढ़्यो अनंद अपार ॥ हरीचन्द को पकरि नचावत गारि देत ब्रजनार ॥ १ ॥

असाढ़

यथारुचि ॥ देखु सखि चन्दा उदय भयो। कबहुं प्रगट लखात कबहुं बदरी की ओट भयो। करत प्रकाश कबहुं कुंजन में कबहूं छिपि जाव। मनु प्यारी मुखचन्द देखि कै घूंघट करत लजाव। अहो अलौकिक यह वरनु शोभा कछु बरनी नहिं जात। हरीचन्द हरि सों मिलिबे कों मन मेरो ललचात ॥ १ ॥

ग्रीष्म ऋतु

यथा रुचि ॥ दोउ मिलि बिहरत यमुना तीर में करि कर के जल यंत्र।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चलावत भीजि रही लट नीर में ॥ इत उत नाल सखी जन सोहन मनु कमल जल क्षीर में। छींट उड़ावत हंसत हंसावत बोलनि मनु पिक कीर की ॥ सांवरे अंग गोर तन सोहत लपटनि भीजे चीर की। हरीचन्द लखि तन मन वारत छबि राधा बल बीर की ॥२॥

हिंडोरा

परज ॥ दोउ मिलि आजु हिंडोले झूलैं। कञ्चन खम्भ फूल सों बांधे सोभित सुभग कालिंदी कूलैं। झुलवत चहुं दिसि नवल नागरी सो भा कोटिन हू नहिं तूलैं। गावत हंसत हंसाइ रिझावत पिय छबि लखि मनहीं मन फूलैं। चलत चपल दृग कोर परस पर मेटत कठिन मदन की सूलैं। हरीचन्द छबि रासि पिया पिय दरसत ही जिय दुख उन मूलैं ॥१॥

बसन्त

देखौ कुंज बिहारी प्यारी मूरति सन्त बसन्त ॥ जोबन झालरि लोने सोहत अंग अंग छबि उलहन्त ॥१॥ कोकिल सम बोलनि मधु कर की गूंजनि नूपुर नाद। नव पल्लव सम अधर मनोहर अधरासव मधु स्वाद ॥ फूले फूल विविध बागन में पहिरे सारी सोय। हरीचन्द भागन ते पाई रूप रासि तिय सोय ॥१॥

नित्य

यथारुचि ॥ नटवर रूप निहार सखीरी नट वर रूप निहार। गोहन लगि फिरत जाके हित कुलकी लाज बिसार। ललित त्रिभंग काछनी काछे अमल कमलसे नैन ॥ कर लय कमल फिरावत गावत मोहन को टिक बैन। जग उपहास सहे बहु भांति न जा दरसन के हेत। सो हरि नीके नैननि भरि के काहे देखिन लेत। तुमरी प्रीति अनोखी कि सजनी लखिन परै कछु ख्याल। हरीचन्द धनि धनि तुम दोऊ राधा अरु गोपाल॥१॥

बिरह

न जानी ऐसी हरि करिहैं ॥ हमरे हू हिजन के ह्वै हैं ध्यान जिय धरिहैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ध्रु०॥ होत सामनो जिनि हँसि चितवत भाव अनेक किये। तिन अब मिलतहि सकुचि इते सो मुख हू फेरि लिये॥१॥ मान्यो तिन्हे काम नहिं हमसों तासों निठुर भये। हरीचन्द ब्रजनाथ नाम की लाजहि क्यों मिटये॥२॥

नित्य

श्यामकल्याण॥ नागरी रूप ललासी सोहै। कमल सो बदन पल्लव से कर पद देखत ही मन मोहै॥१॥ अलसी कुसुम सी बनी नासिका जलजपत्र से नैन। बिम्ब से अधर कुन्द दसनावलि मदन बान सी सैन॥२॥ गाल गुलाब कान झुमका मनु करन फूल के फूल। बेनी मनो फूल की माला लखिकै मन रह्यो भूल॥३॥ बाहु सुढार मृनाल नाल सम फूल सरिस सब अंग। फूलन ओट लगे हैं है फल बादत देखि अनंग॥४॥ जानु बनी रम्भा की खम्भा शोभा होत अपार। गूलरि फूल सरिस कटि राजत कबिजन लेहु बिचार॥५॥ नारंगी सी मढ़ी राजत पद नख मनहु प्रवाल। और आभरन बिबिधि फूल बहु कर पहुंची उरमाल॥६॥ चम्पे सी देह दमक दब नासी चमक चमेली रंग। मालति महक लपट अति आवत कोमल सब अंग अंग॥७॥ रसिक सिरोमनि नन्दलाल सोइ भंवर भए हैं आइ। देखि देखि छबि राधा जू की हरीचन्द बलि जाइ॥८॥

नित्य

तथा॥ नाथ तुम प्रीति निबाहत सांची। करत इकंगी नेह जननसों यह उलटी गति खांची। जेहि अपनायो तेहि न तज्यो फिरि अहो कठिन यह नेम। जेहि मकरत छोड़त नहिं ताको परम निबाहत प्रेम। सो भूलै पै तुम नहिं भूलत सदा सँवारत काज॥ हरीचन्द कों राखत हौं बलि बांह गहे की लाज॥१॥

दिवारी

तथा॥ नेकु चल पियपैं बेगहि प्यारी। देखु करी तेरे हित कैसी मोहन

आजु तयारी । पड़े पांवड़े सग मखमल के दल गुलाब रुचिकारी ॥ छिरक्यो नीर गुलाब अतर मृग मद चन्दन घन सारी । परदे परे झा- लरैं झमकैं नैन बितान सुतारी । फरश गलीचन को अति राजत कोम- ल बहु रंग डारी । धरे साज ढिग अतर पान मधु फूल माल जल झा- री । लगी मिठाई रासि दुहूं दिसि दीपक धरे कतारी । बिछी पलंग प- थ फेनु मेनु सम धोस भयो रुचिकारी । पास साज पासन के सोहन कहुं सत रंज संवारी । ठौर ठौर आरसी लगाई दूनी दुति करिडारी ॥ पान खूंटिनि हारा वलि माला फूल बसन लै धारी । भति आले सुगं- ध सों पूरे थान मिठाई डारी । जहं तहं अदब किये सब सखियों ठाढ़ी साज संवारी । मुरछल चंवर रुमाल अड़ानी पीक दान लै बारी ॥ चौंकि चौंकि पिय उठत बिना तुव आगम संक बनवारी ॥ हरीचन्द प्रीतम गर लागि कै कर त्यौहार दिवारी ॥ १ ॥

बधाई

बिहाग ॥ नाचति बरसाने की नारी । जिनके घर प्रगटी श्री राधा मोहन प्रान पियारी । नाचत शिव सनकादि मुनीश्वर नारदादि व्रत धारी । नाचत वेद पुरान रूप धरि डारत तन मन वारी । अति आनन्द बाढ्यो बरसाने प्रगटी श्री वृषभान कुमारी । हरीचन्द आनन्दित ज्ञातमहोत्सव निरखि बलिहारी ॥ १ ॥

बधाई

तथा ॥ नन्द बधाई बांटत ठाढ़े । भई सुता बाबा भानु राय के प्रेम पुलक तन बाढ़े । काहू को सोना काहू को रूपा काहू को मनिग- न दीनो जिन जो मांग्यो तिन सो पायो कहा सबनि को कीनो । का- हु को धेनु बसन काहू को दियो सबनि मन भायो । आनंद भयो कहत नहिं आवै हरीचन्द यश गायो ॥ १ ॥

तथा ॥ नागरी मंगल रूप निधान । जब ते प्रगट भई बरसाने छायो

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आनंद महान। दिन दिन सुख उमड़त घरघर में छिन छिन होत कल्यान। हरीचन्द मोहन की प्यारी राधा परम सुजान॥ २॥

जल बिहार

नाव चढ़ि दोऊ इत उत डोलें। छिरकत कर सों जल अंन्वित करि गावत हँसत कलोलैं। करन धार ललिता अति सुंदर सखि सब खेवत नावैं। नाव हलनि में पिया बाहु में प्यारी डरि लपटावैं। जेहि दिशि करि परिहास झुकावहिं सब ही मिलि जल जानैं। तेहि दिशि युगुल सिमिटि झुकि परहीं सो छबि कौन बखानै। ललिता कहत दाव अब मेरी तुमैं हाथ न प्यारी। मान करन की सौंह खाइ तौ हम पहुँचावैं भारी। हँसत हँसावत छींट उड़ावत बिहरत दोऊ सोहैं। हरीचन्द यमुना जल फूले जलज सरिस मन मोहैं॥ १॥

बसन्त ऋतु में जनम बधाई

नव बसन्त को आगम सजनी हरि को जन्म सुहायो। गावत कोकिल कीर मोरली युवती बजत बधायो। बिबिध दान लहि याचक जन से ललित कुसुम बहु फूले गुन गावत धावत बन्दी जन से भंवरे बहु भूले। उडत गुलाल अबीर रंग सी दधि कांदो झर लाई। नाचत गारी देत नि-लज्जे से गावत ताल बनाई। टेसू फूलन मिस बृन्दाबन प्रगट्यो जिय अनुरागे। केशर सिंचित सम सरसों बन नैन सुखद अति लागे। गोप पाग पहिरे सम शोभित गेंदा तरु इक रासी। बौरे आम सरिस डोलत आनन्द बौरे ब्रज बासी। बंस बेलि लहरानी नन्द जू की अति सुख झालरि लाई। तरुन तमाल श्याम घन उपजे हरीचन्द सुखदाई॥

बधाई

यथा रुचि॥ प्रगटे रसिक जनन के सर बस॥ ध्रु०॥ यसुमति उदर अलौकिक बारिधि श्याम कला निधि निधि रस॥ १॥ पसरित चंन्द्र कला सो पूरब उज्वल बिमल बिसद जस॥ २॥ हरीचन्द ब्रज बधू चकोरी सह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

जहिं कीनी निज बस ॥ ३ ॥

बधाई

तथा ॥ प्रगटे प्रानन हूं ते प्यारे ॥ ध्रु० ॥ नन्द भवन आनन्द करन निधि यशुमति मात दुलारे ॥ १ ॥ आजु भयो सोयो आनन्द भुव फले मनोरथ सारे ॥ २ ॥ हरीचन्द गोपिन के सरबस सब ब्रज के रखवारे ॥ ३ ॥

वियोग

तथा ॥ पिय बिनु बीत गये बहु मास ॥ ध्रु० ॥ दिन दिन मदन सतावत अतिही बाढ़त बिरह हुलास ॥ छिन छिन छीजत कनक छरी सी ढुलकत छांड़ि अवास ॥ बेगि कृपा करि आवहु माधव हरीचन्द गुन रास ॥ १ ॥

होली

काफी ॥ पिया मनमोहन के संग राधा खेलत फाग ॥ ध्रु० ॥ दोउ दिसि उड़त गुलाल अरगजा दोउन उर अनुराग ॥ रंग रेल निझोरी खेलन में होत दृगन की लाग ॥ हरीचन्द लखि सो सुख शोभा अपुन सराहत भाग ॥ १ ॥

दूती

यथारुचि ॥ प्यारी मोसों कौन दुराव ॥ ध्रु० ॥ काहि छिन अनमन मनी सी क्यौं काहे को जिय चाव ॥ काहे को अंसुअन सों मुख धोवत बावरी नेक बताव ॥ हरीचन्द क्यौं कहत न मोसों प्यारी लाइ मिलाव ॥ १ ॥

नित्य बिहार

बिहाग चौताला ॥ प्यारी के कुंज पिय प्यारो आवत हरखि धाय भुजन भरि लीनो ॥ उमगि मिले छतियन सों लपटे दोउ चलत न मारग ह्वै क्यो रंग भीनो ॥ जित की तित रही खरी सखियां सब छूटत भुजन अलिंगन दीनो ॥ हरीचन्द जब बहुत सम्हाराए तब क्यों हूं गौन महलन में कीनो ॥ १ ॥

बिहाग

तथा ॥ प्यारी लाजन सकुची जात ॥ ध्रु० ॥ ज्यौं ज्यौं रति अति बिबस सुहें आरसि मांह लखात ॥ रुहन लाख रहि दूर राखि ये बल करि कर लंत गात ॥ हरीचन्द रस बढ़त अधिक अति ज्यौं ज्यौं तीतल जात ॥ १ ॥

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तथा

तथा ॥ प्यारी छबि की रास बनी ॥ जाहि बिलोक निमेषन लागत श्री वृषभानु जनी ॥ ध्रु० ॥ नन्द मदन सों बाहु मिथुन करि ठाढ़ी यमुना तीर । करक होत सौतिन की छबि लखि सिंह कमर भुअ बीर ॥ २ ॥ कीरति की कन्या जग धन्या अन्या तुला न बाकी । वृश्चिक सीक मकत मोहन हित भौंह छबीली जाकी ॥ ३ ॥ धन धन रूप देखि जेहि प्रति छिन मकरध्वज तिय लाजै । युग कुच कुंभ बढ़ावत शोभा मीन नयन लखि भाजै ॥ ३ ॥ मेष संख्य संकोन समय तन जाके बसत सदाई । हरीचन्द मोहन बड़ भागी जिन अंकम करि पाई ॥ ५ ॥

तथा ॥ पौढ़े दोउ झातनिके रस भीने ॥ मोहन लेत अफीम रहे दोऊ केलि कथा चित दीने । तैसेई सीतल सेज बिछाई सखी बिजन करि लीने । हरीचन्द आलस भरि सोये कछुक ओढ़ि पट झीने ॥ २ ॥

संक्रान्ति

यथारुचि ॥ बिहारे इतही मकर मनावहु । लानी खिचरी सुखद अरोगो हम कहँ सुख उपजावहु । बड़ो परब है आजु श्याम घन कहूँ न चित्त चलावहु । हरीचन्द मिलि देहु महा सुख मेरी लगन पुजावहु ॥ १ ॥

तथा

तथा ॥ प्यारे जानन देहों आज । वो दिन मकर कयो नहिं छांड़ों प्राणनाथ ब्रजराज । मीन मेख बिनु बात करत तुम कहूँ मिथुन ललचाने । धन धन पिय तुम तुल नहिं दूजो सब के घटन समाने । कर कत हिय बीछी सी बातें सौं तिन संग जो कीन्ही । तासों राखों लाय हीय अब करि करि अधिक अधीनी । तो वृषभानु राय की कन्या जो अब तुमहिं न छांड़ों । बड़ो परब यह पुन्य उदय मोहि मिलि तुम सों रंग माड़ों । हसि रा हौन देउं नहिं कबहूँ करौ लाख चतुराई । हरीचन्द मेरे ऐन बिराजो सब्द अबै ब्रजराई ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तथा

तथा ॥ पिया सों खिचरी क्यों तू राखत । कहा मान करि बैठि रही है कछु-क बचन नहिं भाषत । यह संक्रम खिचरी को आली मानहिं दूरि न राखत । हरीचन्द पिय सों खिचरी सी मिलि क्यौं रस नहिं चाखत ॥ १ ॥

तथा

तथा ॥ प्यारी जू के तिल पर हौं बलिहारी । सब सखियन की डीठि डिठोना रति रति पति मद हारी । श्याम सरूप बसत बन सूक्षम सोइ दृग भावत प्यारी । हरीचन्द हरि पीर मिटावन एक यहै सुनकारी ॥ १ ॥

दीनता

यथारुचि ॥ पतित उधारन नाम सही । श्री बल्लभ बिट्ठल बिन दूजो नेह निबाहन हार नहीं । साधन त्यान कर मन लम्पट भूलि बुड़ि क्यौं जाति बही । कोऊ कछू काम नहिं ऐ हैं क्यौं डोलत बर यही म-ही । दीनन को हित नाहिन दूजो यह बात करि सपथ कही । हरीच-न्द से अधम उधारन और यही इक यही यही ॥ १ ॥

परम्परा

छप्पै ॥ प्रथम नौमि गोपी पति पद पंकज अरुनारे । पुनि शिव ना-रद ब्यास बहुरि सुक मुनि मत धारे । बिस्नु स्वामि पुनि बन्दि बिल्व मंगल पद बंदत । श्री बल्लभ चरनार बिन्द युग नौमि अनन्दत । श्री बिट्ठल तिन की दोऊ बिधि संतति जो अब लौं प्रगट । तेहि बन्दत नित हरिचन्द यह परम्परा मत की उघट ॥ १ ॥

जाड़े में सेन समय गाइबे को पद

प्यारी को खोजत हैं पिय प्यारो ॥ मिलि रहि दीपा वलि में झिलि मि-लि फैलो बदन उजारो । नूपुर धुनि सुनि जानि नवेली गहि ल्यायो पिय न्यारो । हरीचन्द गरलाइ मनायो दीप दान त्यौहारो ॥ १ ॥

बधाई ॥ प्रगटी सुन्दर ताकी खान । श्री वृषभान राय के मंदिर राधा ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परम सुजान। गावत गोपी गीत बधाई बाजत तूर निसान। अम्बर दे-व फूल बरसावत चढ़ि चढ़ि दिव्य बिमान। जाचक भये अजाचक सिगरे पाइस विधि मन भात। हरीचन्द ब्रज चन्द पिया की जोरी अति सुखदान॥१॥

धुरपद

भैरों॥ प्रात काल ब्रज बाल पनियां भरन चलीं गोरे गोरे मुख सोहै कसुंभी को चदरा। ताही समय घन आए घेरि घेरि नभ छाए दामिनि दमकि देखि होत जिय कदरा। बोलत चातिक मोर शीतल पवन झकोर यमुना उमड़ि चलीं बरसत अदरा। हरीचन्द बलिहारी उत बैठो गिरधारी। शोभा तो निहारो चलि कैसे छाए बादरा॥१॥

बधाई

राग बसन्त॥ प्रगटे हरि जू आनन्द कन्द। मनु आई भुव पर ऋतु बसन्त॥ सब फूले गोपी ग्वाल बाल। मनु बौरि रहे बन में रसाल। सब ग्वाल धरे केसरी पाग। मनु डारन पै गेंदा सुभाग। फैली चहुं दिसि हरदी सुरंग। सरसों की खेत फूलन के संग। सब के मन में अतिही हुलास। मनु फूलि रहे सुंदर पलास। देखत सब देव चढ़े बिमान। मनु उड़त बिबिध पंछी सुजान। नाचत गावत करत ख्याल। मनु नाचि रहे बन में मराल। गावत मागध बन्दी प्रबीन॥ मनु बोलि रही कोकिल नवीन। पहिरे नर नारी बसन हार॥ मनु नए सब फल लहलहार। सो सुख लूटत हरिचन्द दास। मनु मत्त भंवर पायो सुबास॥१॥

ग्रीष्म ऋतु में राग वृन्दावनी

सारंग॥ प्यारी मति डोलै ऐसी धूप में। तेरे मैं तो वारी गई री॥ जाके हेतु फिरत तू बनवन सो तोहि आपुहि बोले। तेरे मैं॰ चलि किन कुंज उसीर महल तू करु पिय संग कलोलै। हरीचन्द मिलि ठीक दुपहरी सुरति अमृत रस घोलै॥ तेरे मैं॥१॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रथयात्रा

सारँग ॥ पिय मेरे अंकम सुरथ विराजो। सुरंग चूनरी झालरि झूमत मोती लर बहु साजो। किंकिनि कलहु घंटिका बाजनि चँवर चिकुर बल सोहै। अंचर बिजन चलनि मन मोहन सब ही बिधि जिय मोहै। कोक काला काल चक्र चपल वर तुरंग उछाह लगाये। नेह डोरबल सेज भूमि पै करि मनुहार चलाये। अधर सुधा मधु भेंट करोंगीस्वेद कुसुम बरसाई। हरीचन्द बलि बेगि पधारौ जान सिरोमनि राई॥

नित्य

रामखट ॥ प्रात समय उठ तहिं श्री वल्लभ . यह मंगल मय लीजे नाम। कोटि विघन वारन पंचानन सब बिधि समरथ पूरन काम॥ अघ नाशन करुणा निधि दीनानाथ पतित पावन सुख धाम॥ सुमिरत सोच हरन जन आरति मोहन कोटि कोटि रति काम॥ रहिये इनकी शरण सदा चलि बिकि जैये इन कर बिनु दाम। हरीचन्द निरभय इन चरननि छत्र छांह कीजे बिश्राम॥ १॥

मलार

पिय बिन बरसन आयो पानी। चपला चमकि चमकि डरपावत मोहि अकेली जानी। कोयल कूँकि सुनत जिय फाटत यह बरसा दुख रानी। हरीचन्द पिय श्याम सुंदर बिनु बिरहिन भई है दिवानी॥ १॥

गरमी में सेहरे को पद

राग यथारुचि ॥ फूल्यौ सो दूलह आजु फूलही को साजे साज फूलसी दुलही पाइ फूल्यौं फूल्यौं डोले। केशरी बन्यो है बागो मोतिन की कोर लागो फूल झरै जब वह मुख बोले। फूल को सेहरो शीश फूलन की माल कण्ठ फूले फूले नैन दोऊ लगे अनमोले। हरीचन्द बलिहारी निज कर गिरि धारी कलीसी दुलहिया को घूंघट खोले॥ १॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तथा

तथा॥ फूलहु को कंगना नाहिं छूटत कैसे हो बल वीर जू। जानि परी सब आजु तुम्हारी नामहिं के रणधीर जू॥१॥ दूध पिवायो यशुदा मैया जादिन कों सों आयो। चोरि चोरि कै माखन खायो सो बल कहां गंवायो॥२॥ तारी दै दै हंसी सखी सब आजु परी मोहिं जानी। सुनि कै तिनकी बात दुलहिया घूंघट में मुसक्यानी॥३॥ कोटि यतन कोऊ करि हारो लगी लगन नहिं टूटे। हरीचन्द यह प्रेम डोरना सो कैसे करि छूटे॥४॥

तथा॥ फूल को सिंगार करत अपने हाथ प्यारो। फूलनि की कलियन को आभरन संवारो।१॥ पाटी पारि अपुनो हाथ वेनि गुथि बनावै॥ सीस फूल करन फूल लै लै पहिरावैं॥२॥ कंचुकी पहिरावत मैं चपल लई कछु कीनी। प्यारी मुसकाइ आंखि नीची करि लीन्ही॥३॥ किंकिनि पहिराइ झवा लहंगा पहिरायो। देखि देखि मुदित होत प्यारो मन भायो॥४॥ पायल पहिरावन कों चित्त जबै कीनो। प्राण प्यारी सोंचि चरण तब छिपाइ लीनो॥५॥ प्यारी को संकोच जानि प्यारे इमि भाख्यो। मान समय कोटि बार इनहिं शीश राख्यो॥६॥ पायल पग बांधि फूल माला पहिनाई। अपुने कर नन्द लाल आरसी दिखाई॥७॥ प्यारी तब धाइ पिया कण्ठहि लपटाई॥ हरीचन्द बार बार लखि कै बलि जाई॥८॥

मलार

फिरि तलफे गे पापी प्राण फिरि आई बदरी कारी। बिन पिय बचौं फेर याही दुख देखन के हित नारी॥ अति व्याकुल तलफत कोउ नाहिं न धीर दिवावन हारी। देखि दशा रोवत द्रुम वेली धीर सकत नहिं धारी। कोकिल कूक सुनत हिय फाटत क्यों जीवै सुकुमारी॥ हरीचन्द बिन को समुझैहै कहि कहि प्राण पियारी॥१॥

रास के पद

फिरि लीजे वह तान अहो पिय फिरि लीजे वह तान। निनि धध पपमम ई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गत सिरि स्यामा मोहन चतुर सुजान। उदित चन्द निरमल नभ मण्डल थकि गये देव बिमान। क्वनित किंकिनी नूपुर बाजत भान भान शब्द महान। मोहे शिव ब्रह्मा दिक वह निसि नाचत लखि भगवान॥ हरीचन्द राधा मुख निरखत छूट्यौ सुरति समान॥

खंडिता

राग यथारुचि॥ बिहारी जी सूभे रह्या छे थारा नैणा॥ धु०॥ कौन रिझवार संग निशि जाग्या कहा करो छो सैणा॥१॥ कौन को यह लाया छो प्यारे रंग न रंग्यो उपरैणा॥२॥ हरीचन्द थें जन मरा कपटी कौन सुनै थारे बैणा॥३॥

बिहार

बिहाग॥ बैठे दोउ अपने सुख मिलि॥ धु०॥ ऊंचे महलन के चौवारे सरद चांदनी चहुं दिशि रही खिलि॥ प्रिया करत कछु विनय लाल सुनि साहिन सकल जिय बिबस जाति हिलि॥ कहि वच वल हरिचन्द अंस पर हुरत अधर में अधर रहत गिलि॥१॥

अगहन में राजभोग समय

सारंग॥ बारी अति मेरो लाल सोई उठत प्रात काल्ह कहा तोर कैसो बीर भूठही अंगराती। चेरी लाइ छिनारी लावत तुम ग्वालिनी मद माती। दूहि मिसि नित उठि देखन आवत अपनो मन क्यों नहिं समुभावत थोंनन के रस चूर फिरत तुम घर घर में इतराती। हरीचन्द घरनि जाहु लालहि मति देय लाहु कहत बात क्यों बनाइ कापैं इठलाती॥१॥

बिहार

बैठे लाल नवल निकुंजन माहीं॥ अति रस भरे दोऊ अंग जोरि के हिलि मिलि दै गल बाहीं। तैसे श्री गिरि राज शिलापै फूले कुसुम अनेकन भांती॥ तैसी ये यमुना अति शोभित फूली रही कमलन की पांती। तैसेई भंवर गुंजार करत हैं तैसोई त्रिविध बयार। तैसेई भरना भरत अनेक वृन्दावन तरु डार। कर लै कमल फिरावत दोऊ उर फूलन की माल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

हरीचन्द बलि बलि यह छबि लखि के राधा और गोपाल ॥ १॥

माहात्म

सवैया ॥ वेणु धर चक्र धर शंख धर पद्म धर गदाधर शृंग धर बेत्र धारी। मुकुट धर कीट धर पीत पट कटिनि धर कण्ठ कौस्तुभ धरन दुःखहारी। मत्स को रूप धरि बेद प्रगटित करन कच्छ को रूप जल मथन कारी। दलन हिरनाक्ष बाराह को रूप धरि दन्त के अग्र धर पृथिव भारी। रूप नरसिंह धर भक्त रक्षा करन हिरण्यकश्यप उदर नख बिदारी। रूप बावन धरन छलन बलिराज को परशु धर रूप छत्री संहारी। रामको रूप धर नाश रावण करन धनुष धर तीर धर जित सुरारी। मुसल्ल धर हल धरन नील पट सुभग धर उलटि करषन करन यमुन बारी। बुद्ध को रूप धर बेद निन्दा करन रूप धर कल्कि कलियुग संहारी। जयति दश रूप धर छुद्र कमलानाथ श्रुतिहि व्रजान लीला बिहारी। गोप धर गोपि धर जयति गिरिराज धर राधिका बाहु पर बाहु धारी। भक्त धर संत धर सोई हरिचन्द धर वल्लभाधीश द्विज भेष कारी ॥ २॥

बधाई

सारंग ॥ ब्रजजन काँवर जोरि जोरि। आये मन भाये लै दधि घृत निज निज ग्रह ते दौरि दौरि ॥ गोपी आईं गीतनि गावत पाईं परत मुरलोरि लोरि। करत निछावरि देखि प्रिया मुख तन के भूषण छोरि छोरि। दधि काँदो माच्यो आँगन में देत माट सब फोरि फोरि। लूटत झपटत खान मिठाई बारत छिन में कोरि कोरि। गिनत न कोउ काहू को कछु पट भूषण दै तोरि तोरि ॥ हरीचन्द सुख कहत न आवै आनंद बाढ़्यो खोरि खोरि ॥ २॥

तथा

तथा ॥ ब्रजजन मतही आनन्द भयो। श्री ब्रषभान भौन के भीतर सब सुख आन नयो। गाँव गाँव ते टीको आयो भीतर भवन लयो। हरीचन्द आनन्द भयो अति दुख बहि दूरि गयो ॥ १॥

तथा

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तथा

तथा ॥ व्रज में रसनिधि प्रगट भई । चन्द्रभान नृप भाग फले व्रज प्रगटी सुता नई । हरि राधा को प्रेम परम जो सोइ मूरति चितई । कहि हरिचन्द मान लीला रस करि हित भूमि गई ॥ १॥

विहार

केदारा ॥ बैठे लाल यमुना जू के तट पर । ग्रीष्म ऋतु जान प्रतिसुख मान मान संग सब गोपी चतुर तर । विजन चँवर ढुरत चहुं दिशि ते शोभित सुभग नवल वर ॥ हरीचन्द चन्द बदन हरि की छवि लखि कोटि काम । वारि गयो एक एक पदन खवर ॥ १॥

तथा

कलियाड़ा ॥ बीती निशि तिय सोवन दीजे यह ललिता लै बीन बजायो । चौंकि परे दोउ भोर जानि तब रसमसे नैननि आलस आयो ॥ सीरे जानि हार उर के पिय करि मनुहार तियाहि सुवायो । हरीचन्द संगम सुख शोभा सो कैसे कहि जात सुनायो ॥ २॥

रासकेपद

भैरव ॥ वृन्दावन उज्ज्वल वर यमुना तट नन्दलाल गोपिन संग रहस रच्यो शरद यामिनी । नृतत गोपाल लाल संग मैं व्रज बाल बनी अद्भुत गति लेत कोक कलित कामिनी ॥ लाग डांट सुर बंधान गावत अचूक तान ततथेइ ततथेई थेई गति अभिरामिनी । गोपिन संग श्याम । सुंदर मंडल मधि शोभित अति बिहरत बहु रूप मानो मेघ दामिनी । एक दशो नभ चन्द देखि रैन गति शिथिल भई लखि हरि गजपति संग गज गामिनि । हरीचन्द शोभा लखि देव मुनि नभ चकित भनी हरि साथ सबै व्रज भामिनी ॥ १॥

बसन्त

बिहरत राधा मोहन बसन्त । मिलि रसिक दोउ कामिनी कन्त ॥ बागे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भीजे केसर गुलाल । भये बसन बरन सित पीत लाल ॥ मिलि मह कत सुन्दर अंग सुबास ॥ फूलन मालन संग आस पास ॥ प्रेमी सब दोउ किये पान । रंग रंगे मत्त अति ही सुजान ॥ विह्वल रस में मद नहिं थकाय । विहरत निसंक लाजहि लजाइ ॥ लखि जुगुल अलौकिक छवि निधान। हरिचन्द निछावरि करत प्रान ॥ २॥

धमार

काफी॥ ऐरी बिरह बढ़ावन आयो फागुन मासरी । हौं कैसी अब करूं कठिन परी गांसरी । एसखि और ऋतु है गयो बयारहु औररी । और फूले फूल और बन ठौर री । और मन है गयो और तन पीय को । और चटपटी लगी काम की जीय को। बन के फूलन देखि होत जिय शूलरी । बिनु पिय मेरे कौन विरह की हूलरी । एसखि बिसरयो भोजन पान खान सुख चैन री । बढ़ी खुमारी चढ़ी रहत दिन रैन री । रजनी नींद न आवै जिय अकुलायरी । चौंकि चौंकि हौं परौं चित्त घबरायरी । अदा अदा बदि डोलौं पिय के हेत री ॥ काहू नहिं मेरो लाल दिखाई देतरी । सपने में जो कहुं पिय रूप देखातरी । तौ यह बैरिनि नींद चौंकि तजि जातरी। जो कहुं बाजन बाजै गोकुल गैलरी । तौ उठि धाऊं आवत जानूं छैलरी । या घर में सखि कोउ नहिं लागत आगरी । जाके डर हौं खेलन जात न फागरी । बैरिन मेरी सास जिठानी हैं सबै । देखन देत न मोहन को मुरली अबै । जेरौ लाल यह ऐहे कौने कामरी ॥ जो नहिं देखन देत पिया घनस्यामरी । मोहिं अकेली निरबल अबला जानरी ॥ तानि कान लौं खींच्यो मदन कमानरी । कहा करौं कहा जाउं बताओ मोहिरी । कहौ किन और उपाय सपथ है तोहिरी । यदपि कलंकिनि कहत सबै ब्रज लोगरी । तऊ मिटत नहिं मुख लखिबे को सोगरी । रोअन हूं नहिं देत प्रगट मोहिं हायरी। कोंकै सो दुख मिटै बतावउ भायरी । फिरि डफ बाजन सुनि सखि आये फगुआरी । द्वारे खेलत प्राननाथ सुख धामरी ॥ अब कैसे रहि जाय मिलौंगी

आगरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धाइ कै। लाज छाँड़ि जग नेह निशान बजाइ कै। हरीचन्द उठि दौरी भामिनि प्रीति सों। बरजेहू नहिं रही मिली मन मीत सों॥

हिंडोला

गौरी॥ वृषभान कुमारी लाड़िली प्यारी झूलत हैं संकेत॥ संग सुंदर सखी सोहावनी जिनकी नेह हरि सों हेत हो॥१॥ सुन्दर साज सिंगार किये सब पहिरे बिबिध रंग चीर। हिलि मिलि झूलत बढ़ि लाड़िली होन बरस यमुना तीर हो॥२॥ सबै सुहाई नवल बधू मिलि गावत गौरी राग॥ हरीचन्द मुख कोयन बरसत बाढ़्यौ सलिल सोहाग हो॥

बामन द्वादशी की बधाई

सारंग॥ बलि कीनी सो कौन करै। सब बस हरिहि समर्पि प्रेम सों जगत सीख हित को निदरै। द्विज मन मान दान बच पालन दृढ़ तन को-हठि नाहिं टरै। आत्मसमर्पण दास्य भाव निज करि आग्रह को जो अधरै॥ हरि जग स्वामि प्रगटि दिखरायो जामैं शंका सकल जरै। प्रभु प्रति कूल गुरहु निज छाँड़्यौ यह अनन्य मति को चिन्है॥ राजहु गयो शाप गुरु दीने आपु बंधे पै कौन डरै। हरीचन्द दृढ़ता की दुंदुभि जग बजाइ इमि कौन तरै॥१॥

तथा

सारंग॥ बेदन में निज महिमा थापन भये त्रिविक्रम आजु मुरारी। सब जग व्यापकता दिखराई सबन प्रतच्छ सीन हित कारी॥ औरहु एक भेद है यामें जो प्रगट्यो या भेष खरारी। बामन हू बपु सब सों ऊंचे त्रिभुवन दायक यदपि भिखारी॥ जग दाता विराट बपु को फिरि कहो महिम को कहैं विचारी। हरीचन्द छोटे पन हू में जब सब ही सों बढ़ि बन बारी॥२॥

तथा

तथा॥ बलिहि छलन गये आपु छलाये। मांगत दान दियो अपुनो को-बांधि एक छन जनम बंधाये। प्रणतारति हर भगत बछल प्रभु सांचे-नाम निज करि दिखराये। हरीचन्द सुरकाज करन गये असुर राज थिर करि-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरि आवै ॥१॥

तथा

तथा ॥ बलि की मति पर बलि बलि हारी । सिखयो जगहि समर्पन जि-
न निज गुरु की आयसु टारी । हरि सों बड़ो सुपात्र जग नाहीं बलि सों बड़ो
के दाता । भूमि दान सम दान नहीं यह पायी तीनहुं बाता । दृढ़ विश्वास
अचल निज मत हठ कबहुं न डिगत डिगाये । याही ते पहरू करि हरि को
रहत द्वार बैठाये सेवक स्वामि अनन्य भये मिलि गति नहिं परत लखा-
ई । इन में को बड़ो को घटि यह किमि हरीचन्द कहि गाई ॥

भोजन के पद

राग यथारुचि ॥ भोजन करत किशोर किशोरी । कुंज महल में परिगे-
मदा सखि ठाढ़ी बहु ओरी ॥ ललिता ले आई भरि थारी ताती खिचरी
कोरी । तामें घृत डारो बहु ते करि रुचि बाढ़ी नहिं थोरी ॥ हंसत परस प-
र खात खवावत बंधे प्रेम की डोरी । हरीचन्द बलि बलि जोरी पर बरनि
सकै सो कोरी ॥१॥

सक्रान्ति के पद

राग यथारुचि ॥ भागन पाइये जू लाल न बैस संधि संक्रौन । तिथ-
तिथि पाइ आय गई तन में चलो किन राधा रौन ॥ बाल तरुनाई मि-
लन धुराय हन अति थोड़े ही बेर । ललिता बनि ज्योतिषी बनावत स-
मय न पैहो फेर । कुंजकुटी तीरथ में चलि के करहु वेद अस्नान । हरी-
चन्द ललिता चरन कों मिलि देहु दोऊ सुखदान ॥१॥

बधाई

तथा ॥ भट इक बात नई सुनि आई । आजु भई कीरति के कन्या
बाजत रंग बधाई । नर नारी सब है मिलि आई कीरति घर छबि छाई ।
अति आनन्द कहत नहिं आवै हरीचन्द बलि जाई ॥२॥

रथ के भाव को पद

मल्लार ॥ मनोरथ करत द्वार पर ठाढ़ी । करि करि ध्यान श्याम सुंदर को
मुख ... दलित तन बाढ़ी । ऐहैं री या मारग सों हरि कमल नयन घनश्याम ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेनु बजावत कमल फिरावत हँसत गोधन दाल। करि करि बहु पकवा-
न मिठाई भरि भरि राखत थार। अपने हाथन गूँथि बनावत रचि फूलन
के हार। हरि मेरे रथ ठाढ़ो करि मोको अति सुख देहैं। जो हमरानि दवे-
के राखे हैं सो प्रभु रुचि सो खैहैं। दै बीड़ा आरती करैंगी बिजन हाथ दु-
लैहैं। तन मन धन न्यो छावरि करिहैं देखि देखि सुख पैहैं। जो जो क-
हुं घन बरसन लागे ताहि निवारन काज। भीजत उतरि मेरे घर ऐहैं ज-
हँ सुख को सब साज। सुफल काम सब मेरो ह्वैहै जो कछु चित्त बिचा-
र्यो। ऐसे ग्वालिन करत मनोरथ रथ को दूरि निहार्यो। हरि आये बाद-
रहू आये बरस न लाग्यो पानी। ताके घर प्रभु उतरि पधारे भीजत आपु-
हि जानी। अति आनन्द भयो ताके चित मिलि प्रभु अति सुख दीनो॥ ह-
रीचन्द प्रभु अन्तरयामी सुफल मनोरथ कीनो ॥१॥

संक्रान्ति

मकर संक्रोन सखी सुखदाई। मकर कुण्डल सों मकर बिलोचनि क्यौं
न मिलत तू धाई। मकर केतु को भय नहिं मानत दुर में रही छिपाई।
केलुव बिनु मे मकर बिना जल ब्याकुल मुकरन पाई। मान मान तजु मा-
न धरम कार कार धरि लै गरलाई। हरीचन्द तजु मकर राधिके रहु त्यौ-
हार मनाई ॥२॥

स्फुट

सुघराकचि॥ मन तुहि कौन यतन बस कीजै। काहू सों जिय मानत ने-
रो कहाँ कहाँ चित दीजै। ज्ञान कर्म कुल नेम धर्म सों होत न तोहि संतो-
ष। घरघर भट कट डोलत धायो किये अनेक भरोस। कामादिक नित
काम तिहारे सों नहिं क्यों हू माने। सहस सहस नित करत मनोरथ ता-
हि कौन विधि जाने। कछु पूरो नहिं परत यतन नित तौहू चाहत ढावे।
हरीचन्द क्यों छाँड़ि न सब को पिय पद में चित लावै ॥२॥

बधाई

कान्हरा॥ महारानी तिहारो घर सुबस बसो। आजु सुफल ब्रजबास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भयो सब घर घर अति आनन्द रसो। कोउ गावत कोउ करत कुलाहल माखन को कोउ लेत गसो। श्री राधा के प्रगट भये ते यादरसानो सुख बरसो। देत असीश सदा चिरजीवो मोहन को संग ले बिलसो। हरीचन्द आनन्द अति बढ़्यो सब जिय को दुख दरद नसो॥ २॥

बाललीला

बिलावल॥ मणिमय आंगन प्यारी खेलै। किलकि किलकि हुलसत मनहीं मन गहि अंगुरी मुख मेलै। बड़ भागनि कीरति श्री मैया गोहन लागी डोलै। कबहुं कलै भुन भुना बजावति मीठी बतियनि बोलै। अष्ट सिद्धि नव निधि जाकी दासी सो ब्रज शिशु वपु धारी। जोरी अविचल सदा बिराजो हरीचन्द बलिहारी॥ २॥

तथा

आसावरी॥ मेरा लाड़िलो गोपाल माई सांवरो सलोना। जाके हित लाई मैं सुरंग खिलोना। छाड़ो हठ वारने हों वार वार जाऊं मुख देखे लालन को नैनन सिराऊं। ब्रज कोउ जियारो मेरो छोटो सो लाला। मानै मेरो ईक हो ऐसा शुभ चाला। तुमरे हित खोजूं लाल दुलही इक छोटी। मिलि खेले लालन के रहे संग जोटी। माखन मिसिरी हों देहौं चाखो मेरे प्यारे। छाड़ो मचलाई लाल नन्द के दुलारे। होंतो संग लागी फिरों पलकहू न त्यागों। पालने झुलाऊं गीत गाऊं अनुरागों। हौंतो माता हूं तेरी मेरी बात मानों। हरीचन्द बलिहारी आर नाहिं ठानो॥ ३॥

रथयात्रा

सारंग॥ मेरे मनरथ चढ़ि पिय तुम आवो। चारु चक्र बुधि बल छल साहस लगन की डोर लगावो। चपल तुरंग मनोरथ बहु बिधि निर भय छत्र छवावो। हरीचन्द गर लागि हमारे प्रेम धुजा फहरावो॥ १॥

बधाई

यथारुचि॥ मंगल सब ब्रजबासी लोग। मंगल मय हरि जिन घर प्रगटे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिटे अमंगल भवके सोग। मंगल ब्रज बिंद्रावन गोकुल मंगल माखन दधि घृत भोग। हरीचन्द बल्लभ पद मंगल गोपी कृष्ण संयोग॥२॥

मान कोपद

बिहाग॥ मेरी री मत कोउ होउ बसीठि ॥ ध्रु०॥ मैं उन की वे मेरे रहि हैं-सदा हिये में पीठि ॥१॥ मैं मानिन वे मनावन हारे मेरी उनकी मिलि दीठि ॥२॥ हरीचन्द मिलि हौं मैं उनसों ले मनुहारन मीठि ॥३॥

नित्य

पंचारुचि॥ मेरेई पौरि रहत ठाढ़ो नित नदारे नन्द राय जू को ढोटा॥ ध्रु०॥ पाग रही भुव ढरकि छबीली यामें बांध्यो है मंजुल चोटा॥१॥ चितवन हँसि फिरि मोलन हेरत करले बेनु बजावत॥ धरि अधरन दहलन छबीलो नाम ह मारोइ गावत॥२॥ कर लै कमल फिरावत चहुँ दिशि मोलन हरि नदारे॥ हरीचन्द मन हरि ल्ले हमरो हँसि हँसि पाग संवारे॥३॥

तथा

तथा॥ मारग रोकि भयो ठढ़ो जान न देत मोहिं पूछत है तू कोरी॥ ध्रु०॥ कौन गांव कह नाम तिहारो कहीं गई नेक गोरी॥१॥ कित चली जात तू बदन दुराये री मति की भोरी॥२॥ सांझ भई अब कहां जायगी नीकी है यह सांकरी खोरी॥३॥ बहुत यतन करि हारी ग्वालिनि जान दियो नहिं तेहि घर ओरी॥४॥ हरीचन्द मिलि बिहरत दोऊ रैनिनि नन्द कुंवर श्री वृषभान किशोरी॥५॥ बसंत

महा महोत्सव दिवस पंचमी खेलत लाल बसन्त। पूरन करन मनोरथ जियके ब्रज नारिन के कंत॥१॥ गोपी गोप जुरे इक ठौरे लेले साज समाज॥ भीर भरी नंद भवन मनोहर शोभा बाढ़ी आज॥२॥ गावहिं बहुविधि भाव बतावहिं प्रगट करहिं अनुराग॥ निरखि निरखि छबि सांवल मुख की सबके मन मथ जाग॥३॥ गारी देहिं अबीर उड़ावहिं केशर छिरकत अंग॥ परसत ही तन श्याम सुंदर को बाढ़यो अधिक अनंग॥४॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाल गुलाल की धूंधर में तब ले लिपटाये अंक। गुरुजन त्रास लाज सब कुलकी त्यागि भई निरशंक ॥५॥ सब अभिलाख भये सरि पूरण पूरी जिय की आस। गोपीचन्दीं ब्रजबनिता निज गृह लाय प्रेम की फांस ॥ ६॥

ग्रीष्म कोपद

यथारुचि॥ मोज भरे दोउ होज किनारे बैठे करत प्रेम की बतियां। ग्रीष्म ऋतु लखि सखिन बनायो मंजु कुंज रचि पोह पन पतियां। सीतल पौन परसि जल कण मिलि सीतल भई सरस सीरनियां। हरीचन्द अलसाने दोऊ मुरि मुरि बिहंसि रहत लागि छतियां॥ १॥

धमार

राग धनाश्री॥ मन मोहन की वारि गोरी गूजरी॥ मगन भई हरि रूप में सब कुल की लाज बिसारि गी॥ १॥ नन्द सुवन को नाम हो कोऊ वाके आगे लेइ॥ सुन तहि तन थर थर कंपे मुख उत्तर कछू न देइ॥ २॥ श्याम सुंदर को चित्र हो जो कोउ देत दिखाई। नैनन सों अंसुवा बहे मुख वचन कह्यो नहिं जाई॥ ३॥ जो कोऊ वासों धूंछई मुख बोलत आनकी आन। जियको भेदन खोलई वह नागरि चतुर सुजान॥ ४॥ दृगको जल सूखे नहीं हो मनु यमुना बहि जाइ॥ गोरो मुख पीरो पर्यो मनु दिन में चन्द लखाइ॥ ५॥ नित गुरजन खीझत रहें हो लरत ससुर अरु सास॥ तिनकी सब बातें सहे नहिं छोड़े प्रेम की फांस॥ ६॥ तन अति ही दुबरो भयो मनु फूल छरी की चाल। ओरो मुख नित नित घटै अरु सूखे अधर रसाल॥ ७॥ जो कोऊ कहि देइ हो मग मोहन निकसे आइ॥ सुनतहि उठि धावै अरी एह काज सबै बिसराइ॥ ८॥ मग में जो मोहन मिले हो नहिं देखत भरि नैन॥ घूंघट पटकी ओट में हो करत कछू इक सैन॥ ९॥ जहां मन मोहन पग धरै तहे की रज शीश चढ़ाइ। सखियन को संग छोड़िके वह पाछे लागी जाइ॥ १०॥ या ब्रजकी सब ग्वालिनी ही ज्यों ज्यों करत चबाव॥ त्यों त्यों वाके चित्त में हो बढ़त चौगुनो चाव॥ ११॥ जो बैठे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

एकान्ता में हो जपत उनहिं को नाम ॥ ध्यान करै नन्दलाल को नहिं भावै कछु धन धाम ॥ २२ ॥ खान पान सब छोड़ि कै हो पति को सुख बिसराइ। कोउ मिसि सों ब्रजराज के वह घर के मारग जाइ ॥ २३ ॥ बातन में वह गइ कै हो पूछत उनकी बात। जो हमहूं कछु पूंछिहीं तो बातन में फिरि जात ॥ २४ ॥ नैन नींद आवै नहीं थाके लगे स्यामसों बैन ॥ भावै नहीं कोऊ भोग सो बाने त्याग्यो सब सुख चैन ॥ २५ ॥ जो कोउ समुझावै ही तो औरहु व्याकुल होइ ॥ हरीचन्द हरि में मिली हो जल पै सम सब खोइ ॥ २६ ॥

स्फुट

रागयथारुचि ॥ मोहनलाल के रससानी । तनकी सुधि न भवन की सुधि कछु डोलत फिरत दिवानी ॥ उघरि कहत पिय गुन सबही में गावत कोकिल बानी । बिथुरी अलक सरकि रह्यो अंचल चंचल चखन लखानी ॥ पियरस मत छकी आसव सी पिय के रूप लुभानी ॥ पिय के ध्यान मूंदि रही लोचन अंतरगति प्रगटानी ॥ उझकि लल कि चौंकति भुज भरि भरि इमि सुख रहत भुलानी ॥ निजमन हंसत मौन ह्वै बैठति रो अति कहत कहानी ॥ हरीचन्द इक रस हरि के रंग दिन निसि जात नजानी ॥ प्रेम समुद्र तन नाव डुबोयहु प्रेम ध्वजा फहरानी ॥

विजयदसमी

मारू ॥ मान गढ़ लंक के बिजय को मानिनी आज ब्रजराज रघुराज बनिके चढ़े भृकुटि धनु नैन शर बिकट संधानिकै मुकट की डाल करवाल अल कन कढ़े ॥ कोकिला कड़कि उघरत कड़खात ही बदत बंदी बिरद भवंर आगे बढ़े ॥ कोक की कारिका बानरी सैन लै दास हरिचन्द रति बिजय आनन्द मढ़े ॥

अशीश

कान्हरा ॥ माई तेरो चिरजीवो गोविन्द । दिन दिन बढ़ौ तेज बल धन जन ज्यों दूइज को चन्द ॥ पालौ गोकुल गोपी गोसुत गाय गोप सानन्द। हरौ सकल भय निज भक्तन को नासौ सब दुख दंद ॥ हरिचि-

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखि गोद में अनुदिन रोहिनि यसुदानन्द। लगों बलाय प्रान प्यारे की मम बैननि हरिचन्द ॥१॥

बधाई

कान्हरा॥ यह निधि धर्म्महिं ते पाई। कीरति मैया तू बड़भागिनि जो तेरे घर आई। जाको ध्यान धरत सनकादिक शम्भु समाधि बढ़ाई। सो निधि तजि बैकुण्ठ धाम को बरसाने में आई। जाते ब्रज बिहरत आनन्द भरि श्री गोकुल के राई। सो निधि बार बार उर धरिकै हरीचन्द बलिजाई ॥१॥

रथयात्रा

सारँग॥ रथ चढ़ि नन्दलाल पीय करत हैं बन फेरा॥ आजु सखी लालन संग बिहरिबे की बेरा॥ रतन खचित सुन्दर रथ दिव्य बरन सोहे। छतरी ध्वज कलस चक्र सुर नर मन मोहे॥ छाई घन घटा चारु आनन्द बरसावैं॥ प्रमुदित घनश्याम तहाँ राग मलार गावैं। और कोऊ संग नाहिं हरि अरु ब्रज नारी। हाँकत रथ अपने हाथ राधा सुकुमारी। कुंज कुंज केलि करत डोलत हरि राई॥ हरीचन्द युगुल रूप लखिकै बलि जाई ॥१॥

जाड़े में पौढ़िबे को पद

बिहाग॥ रजाई करत रजाई माहीं। राजा कृष्ण राधिका रानी दिये बाँह में बाहीं॥ सुखद सेज सुइ राज सिंहासन छत्र ओढ़ना सोहे। चँवर चिकुर डोलत चहुं दिसि तें कोत है जो नहिं मोहे। बजत निसान जीति जग को कंकन किंकिणि बहु भाँती॥ झरत बादला मोती दीनी। सोइ दीनन मनि पाँती। बँधुवा मदनहिं बाँधि मँगायो जे पाइन तर पेल्यो। कियो रिवराज सकल सुख संपति आनन्द सिंधु सकेल्यो। नव बंदीजन बेद स्वास कढ़ि पढ़ेयो बिरद अकुलाई। कियो स्वेद अभिषेक रीझ कच खचित कुसुम झरलाई। राज तिलक सिर दयो महा- अधर सुधा नज़राने॥ तिहि लहि सरबस दियो सरोपा साज नील

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मद बानो। नाची देखत वारि मुखी तहँ परमानन्द रह्यो छाई। हरीचन्द औसर तब लखि कै प्रेम जगत लिखवाई ॥ १ ॥

स्फुट

राखरी सेम्फ की बलि जैं ॥ महा पतित सों प्रीति तिहारी एक तुमहिं में पैये। नेमिनि जानिन दूरि राखि कै हमहिं पास बैठये। हरीचन्द यह जग उलटी गति एक तुमहिं में पये ॥ १ ॥

रास

खथा रुचि ॥ राधिका नाथ के साथ ब्रज बाल सब नवल यमुना पुलिन रास राच्यो आज। लेत संगीत गत शब्द उघटत बिबिधि एक गावत राग सुरन सोच्यो आज। तत्त थेई तत्त थेई प्रगट धुनि होत तहँ बजत किंकिन चुरी अनन्द माच्यो आज। थकित सुर गनन हरिचन्द निज तियन सह देखि जब मुदित नंद नन्द नाच्यो आज ॥ १ ॥

नित्य

तथा ॥ राधिका पौढ़ी ऊँची अटारी। पूरनचन्द ज्यों नभ में लखि फैली बदन उजारी। दोऊ जोति मिलि एक भई है भूमि गगन लों भारी। सो छबि देखि सखी तृन तोरत हरीचन्द बलि हारी ॥ १ ॥

दिवारी

रच्यो यह तेरे हि हित त्योहार। दीप दिवारी जुगुति निकारी तो हित नन्द कुमार। तुम्र महलन की सुरति करन हित हटरी रुचिर बनाई। तुव मुख चन्द प्रकाश लखन हित दीपावली सुहाई। हाठ लगाई तुव आवन हित और कछुन सन्देह। हरीचन्द बिहरे किन भुज भरि प्रीतम सों करि नेह ॥ १ ॥

नित्य

वधाई ॥ राधिका मंगल की नव बेलि जादिनत प्रगटी बरसाने सब सुख धर्यो सकेलि। नित नव आनँद नित नव मंगल नित नव नौतन केलि। हरीचन्द बिहरति प्रीतम सों करात भुजा उर मेलि ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बधाई

रायजू आजु बधाई दीजे। तुम्हरे प्रगट भई श्रीराधा कह्यो हमारो कीजे॥ गोपिन को मनिगन आभूषण दै आशिख लीजे। ग्वालन पाग पिछोरी दीजे याते सब सुख छीजे। तुम्हरी सुता जगत ठकुरानी जायो सुख लखि लीजे। हरीचन्द वृषभान सुता के चरण कमल रस पीजे॥ १॥

बधाई

रास रस ब्रज में प्रगट भयो। फूली फिरत सबै ब्रज वनिता तन को ताप गयो। लीला रूप शील गुन सागर ब्रज आनन्द भयो। हरीचन्द ब्रजचन्द पिया को आनन्द अतिहि दयो॥ १॥

बसन्त

चौताला॥ ऋतु बसन्त सुख करत आनन्द सब छिति रहंत॥ ब्रज में विहरंत जहां नन्दलालरी। चन्दन चोवा गुलाल मृगमद के बिंदु भाल वन्दन बुक्का रसाल करत ख्यालरी॥ १॥ परसत कुच भागि जात आनँद उर नहिं समात धावत नहिं पावत नन्दलाल बालरी॥ औचक फिरि आय गहत मन में अति सुखहि लहत गारी मुख देत चलत चपल चालरी॥ २॥ बाजत वीणा मृदंग आवज मुरचंग चंग बाँसुरी बजे संग संग देत तालरी॥ बाढ़्यो सुख अति अपार को कवि कहि पावे पार गावत हरिचन्द तन्यो सुख को जालरी॥ ३॥

बिहार

बिहाग॥ रसिक गिरिधरन संग सेज सोई भली। रीझि पिय देत सुख दान की रलि लली॥ ध्रु०॥ उझकि झुकि चूमि मुख लूटि रस अधर सुख मेटि जिय दुसह दुख करत नव रंग रली॥ भुजन सों भुज बँधे अंग प्रति अंग सधे कसमसक कुम्हिलात सेज कुसुमन कली॥ अंग उमगे रंग पिया प्यारी संग प्रेम रति जंग मग मदन मद दल मली। सखी हरिचन्द रही रीझि तन मन वारि करत गुन गान रस मत चहुं दिशि अली॥ १॥

तथा

तथा॥ रस बस में निशि जागत जानी। कहत सुनत कछु हंसत हंसावत दृग जोरल छिन सरिस विहानी। आलस विवस जम्हात परस्पर कहि बलिहार मधुर

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुर बानी। रूपलालची दृग नहिं झपकत जागतही निशि सकल सिरानी। अरुझे प्रेम फन्द नहिं सुरझत मुख चूमत हरि राधा रानी॥ हरीचन्द सखि गन सोइ गावत युगुल प्रेम की अकथ कहानी॥

धमार

धनाश्री॥ लाल मेरो अचरा खोलेरी गुरुजन की नहिं मान लाल मेरो अचरा खोलेरी॥ धु०॥ पनिया लेन हौं निकसी मोसों हँसि हँसि बोलेरी॥ १॥ मीठी-आढी बात सों प्यारी अमृत घोलेरी॥ २॥ हरीचन्द पिया साँवरो संग लागोइ डोलेरी॥ ३॥

नित्य

लालन पौढ़ो हौं बलिजाऊँ॥ धु० चौपी चरण कहानी भाखौं करि मनुहार सोवाऊँ॥ १॥ सीत भीत परदा बहु डारौं नवल अँगीठी ल्याऊँ॥ २॥ सरस रंग परि मल कोमल अति चारु रजाई उढ़ाऊँ॥ ३॥ मधुरे गुन गाऊँ प्यारे को करि मनुहार मनाऊँ॥ ४ हरीचन्द पौढ़ो प्रिय लालन हौं तेरे बलि जाऊँ॥ ५॥

स्फुट

लाल यह तो तुरकन की चाल॥ धु० दुख देनो गल रेति रेति कै करनो ताहि हलाल॥ जो वध करनो होइ बधो तो क्यों खेलत यह ख्याल॥ एक हाथ में काम बनैगो छूटैं गे भवजाल॥ कै मारो कै तारो मोहन कै मोहिं करो निहाल। हरीचन्द मति यों तरसाओ बहुत भई नन्द लाल॥ १॥

रथ

सारंग॥ लाल नहिं नेको रथहि चलावे। गली साँकरी अटकि रह्यो रथ नहिं कहुं इत उत जावे॥ उत ब्रषभान कुमारि अटापैं ठाढ़ी दृष्टि न टारे॥ इत नन्द लाल रसिक बर सुन्दर इक टक उतहि निहारे। ये हँसि हँसि कै कमल फिरावत वे दोउ नैन नचावैं। ये पीताम्बर लैजु उड़ावैं वे मधुरे सुर गावैं॥ रीझे रसिक परस्पर दोऊ हरीचन्द मनमाहीं॥ ये इत अपनो रथन चलावत वेन अटा सो जाहीं॥ १॥

स्फुट

यथारुचि॥ लाल लाल कर पद लाल अधर रस लाल लाल नैन तारी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साँचे लाल भये हौ लाल भाल बिन गुन लाल पीक छाप तल लाल लाल ही महावर किये पै रये हौ ॥ पीरो पट छाँड़ि लाल पट भली ओढ़ि आप अनुराग प्रगट दिखावत नये हौ ॥ हरिचन्द अरुण निरख्यो निगुनि चौंकि अरुन उदे सो आज अरुन भय लाये हौ ॥ ४ ॥

रास

यथारुचि ॥ लखि सखि आजु राधिका रास ॥ यमुना पुलिन सरल कोमल कल जहँ भक्ति का विकास ॥ उदित चन्द पूरन नभ मण्डल पूरन अज तिय-आस ॥ मद पूरन पिय पास बने सजि निकर चिकुर भल भास ॥ प्रचलित पवन रवन हित मह आनंद मद दवन सुवास रवन मदद मद मंद गवन सुख भवन जहाँ हरि वास ॥ बजत मृदंग उपंग चंग मिलि भजन जति लति जास ॥ बढ़्यो रंग रति रंग ढंग लखि अंग उमंग प्रकाश ॥ मुरली रली भली बाजन मिलि बीन लीन सुर स्वास ॥ ताल देत उताल बजावत ताल तालकरि हास ॥ उघटत श्रीराधे धधि मधुर ध्वनि बन सब आस हरि राधा की बदन रचन लखि अलि हारी हरि दास ॥

स्फुट

देश ॥ वेगि आवो प्यारे बनवारी हमारी ओर ॥ ध्रु० ॥ दीन बचन सुनतो उठि धावो नेकु न करहु अबारी ॥ १ ॥ कृपा सिंधु छाड़्यो निठुराई अपनो बिरद सम्हारी ॥ २ ॥ थाने जगदीश दयाल कहे क्यों म्हारी सुरत बिसारी ॥ ३ ॥ शरणागत दीजो मोहिं प्यारा हौं हूं दासी थारी ॥ ४ ॥ क्यों नहिं दीन बचन सुनो लालन कौन चूक है म्हारी ॥ ५ ॥ तनके प्राण रहैं नाहिं तनमा विरह व्यथा बाढ़ी भारी ॥ ६ ॥ हरीचन्द गहि बांह उबारो तुमतो चतुर बिहारी ॥ ७ ॥

बिहार

वे देखो चांद ऊंचे महल दोउ झलकत रूप झरोखन आई ॥ ध्रु० ॥ हसनि मुरनि बतरानि भरम पर कछुक दूरते परत लखाई ॥ फैली अंग प्रभा दीपक में जाल रंध्र सों थिरि थिरि आई ॥ हरीचन्द कंकन किंकिनि रव निसि के उझीर भयो मधुर कछु सुनाई ॥ १ ॥

रथ यात्रा

वह देखो सखि सेत ध्वजा फहरान ॥ ज्यों ज्यों रथ नियरे आवत है त्यों त्यों मन

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अकुलात ॥ खंजन से भए नैन सखी के चकित इत उत डोलैं। आवत प्रान नाथ रथ चढ़ि कै सजनी यह मुख बोलैं। जहं लगि दृष्टि जात प्यारी की यह छवि होत रसालैं। मानहु आदर सों पिय के हित कमल पांवड़े डोलैं। अति अनुराग संग बैठन को प्यारी मन की जानी॥ हरीचन्द ले रथ बैठाये तिया अति हि सुख मानी॥१॥

पालना

वारी वारी हों तेरे मुख पैं वारी मैं तेरे लटकन पैं वारी॥ पलना झूलो हो हठ छांड़ो बलि बलि गई महतारी। छोटी सी दुलहि नि तोहि ब्याहौं अपने बाबा की दुलारी। तुम झूलो हों हरखि झुलावों हरीचन्द बलि हारी॥२॥

तथा

वारी मेरे लालन झूलो पलना॥ हौं बलि जाऊं बदन की मोहन मानहु बात हमारी। माखन लेहु ललन ब्रजजीवन वार नेगे महतारी॥ अचरा छोरहु तुमहिं झुलाऊं हरीचंद बलिहारी॥१॥

स्फुट

श्याम रुचि॥ सखी मेरे नैना भये चकोर॥ ध्रु०॥ अनुदिन निरखत श्याम चंद्रमा सुन्दर नन्द किशोर॥१॥ तनिक वियोग भये उर बाढ़त बहु विधि नैन मरोर॥२॥ होतन पल की ओट छिन कहूं रहत सदा दृग जोर॥३॥ कोउ न इन्हे छुड़ावन हारो अरुझे रूप झकोर॥४॥ हरीचन्द नित छके प्रेम रस जानत सांझ न भोर॥५॥

गरमी को पद

सखी मोहिं ग्रीष्म अति सुख दाई॥ ध्रु०॥ जामें शोभा श्याम अंग की प्रतिछिन परत लखाई॥१॥ बिनु अंतर पट मिलत पियारो अंग अंग सों लाई॥२॥ हरीचन्द लखिके सुख पावत गावत केलि बधाई॥३॥

धमार

देस॥ माड़ूला म्हारो भींजे न डारो रंग॥ ध्रु०॥ मति नाखो गुल्लाल अंखियन में सीखा छौ किन सेहू॥१॥ नाम लेइ म्हारो मति गावो गारी संग बजाई कै चंग॥२॥ हरीचन्द मद मात्या मोहन मति ल्लागो म्हारे संग॥३॥

फूलसिंगार॥ सखियन आज नवल दुलहिन को फूल सिंगार बनायो है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फूलन के आभरन मनोहर रचि रचिकै पहिरायो हो ॥२॥ फूलनि बेनी गुही मनोहर फूलन मौर सुहायो हो। फूलन के कँकना कर बाँधे फूलनि मगइ पछायो हो ॥ ३॥ फूलनि चोली फूलनि सारी फूलनि लहँगा भायो हो॥ दुलहिन दुलहा गांठ जोरिकै एक पास बैठायो हो ॥ ३॥ फूली फूली सब सखियन मिलि फूल्यो मंगल गायो हो ॥ फूली जोरी देखि नैन सों हरीचन्द सुख पायो हो ॥ ५॥

बहार

शोभा कैसी छाई कोइल कुहँकै भंवर गुंजारे सरस बहार फूलि रही सरसों अँखियन लगत सोहाई देखो। बीत बसन्त सिसिर ऋतु आई फिरि गई काम दोहाई ॥ बौरन आम लगे मन बौरयो बिरहिन बिरह सताई देखो। जाने न देहों तोहि ऐसी समय मैं लेहों लाख बलाई ॥ हरीचन्द सुख चूमि पियरवा गरिवौ रहि हों लगाई देखो ॥ १॥

मकर संक्रान्ति

टोड़ी ॥ सुखद अति खिचरी को त्योहार। मिलि बैठे दोउ कुंज सखी री नीके नैन निहारि। पहिरि छींट बागे अति सुन्दर ओढ़े सुख दरजाई। सिसिर प्रवेश दिखावत गावत तान मान सुखदाई ॥ सखी सबै मिलि नेम पुजावत करत युगुल की सेवा॥ ताती खिचरी भोग लगावत भेट भरत बहु मेवा॥ करत दान तिल गौर श्याम दोउ हँसि हँसि पीतम प्यारी ॥ हरीचन्द जनि रीझि प्रान धन डारत छिनु छिनु वारी॥ १॥

टिपारे को पद

मल्लार॥ सखी री ठाढ़े नन्द कुमार॥ सुभग श्याम घन सुख रस बरसत चितवन सांझ अपार॥ नटवर नवल्ल टिपारो सिर पर लखि छबि लाजत मार॥ हरीचन्द बलि बूंद निवारत जब बरसत धन धार॥ १॥

कार्तिक में सांझ को गाइबे को पद

यथारुचि॥ सांचहि दीप सिखासी प्यारी॥ धूम केस तन जग मगाति दुति दीपति भई दिवारी॥ स्वयं प्रकाश अकुराइ सुहाई बिनु अधार छबि छाई॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

راگ سنگره ٦٣

सदा एक रस नित्य अधिक यह वासों चाल लखाई ॥ भरत सुगंधन ब्रज कुंजन मग शीतल तन कर वारी ॥ प्रीतम तनको विरह मिटावत हरीचन्द दुख जारी ॥१॥

मलार

सखीरी मोरा बोलन लागे ॥ मनु पावस को टेरि बोलावत तासों अति अनुरागे । किधौं श्याम घन देखि देखि के नाचि रहे मुद पागे । हरीचन्द ब्रजचन्द पिय तुम आइ मिलौ बड़ भागे ॥१॥

मलार

सखीरी कछु तो तपन बुझानी ॥ जबसों सीरी पवन चली है तबसों कछु मन मानी ॥ कछु ऋतु बदलि गई री आली मनु बरसै गो पानी ॥ हरीचन्द नभ दौरन लागे बरसा के अगवानी ॥२॥

श्री गिरधरजी की बधाई

सदा तुम माया वाद निवास्यो ॥ जब जब प्रबल भयो मिथ्या मत तब तब प्रगट बिदास्यो ॥ प्रथम महि होय विष्णु स्वामी प्रभु यह मारग विस्तास्यो ॥ फिरि श्री वल्लभ है अगिन काठ कटु माया मत छिन जास्यो ॥ अबके काशी लखि असुरासी उधरन तासु विचास्यो ॥ कृष्णावति ते श्री गोपाल ग्रह यदु कुल द्विज अवतास्यो ॥ नाक्ष जगत गुरु सुनत श्रवण पुट पावन अंमृत पास्यो ॥ कियो ग्रंथ बहु घर थिर थाप्यो मायावाद बिगास्यो ॥ श्री गिरधर गिरधर है प्रगटे पुष्टि पंथ गिरि धास्यो ॥ प्रबल प्रवाह इन्द्र धारासों निज ब्रज लोग उबास्यो ॥ काशी में गोकुल करि दीन्हो श्रुति रहस्य उच्चास्यो ॥ हरीचन्द को जानि आपुनो करुना करि निश तास्यो ॥१॥

असीस

यथारुचि ॥ सदा ब्रज सुबस बसो बरसानो ॥ जहां प्रगटी रसकी निधि राधे बाजत प्रगट निसानो ॥ युग युग अविचल राज रह्यो दोउ रावलि अरु नहरानो ॥ हरीचन्द के शीश रहो नित नील पीत को बानो ॥

धमार

काफी ॥ सुन्दर श्याम शिरोमनि प्यारो खेलत रस भरि होरीजू ॥ इत सब सखा लसत रंग भीने उत वृषभान किशोरीजू ॥ नाचत गावत रंग बढ़ावत करत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बजावत तारीजू॥ हंसत हंसावत रंग बढ़ावत गावत मीठी गारी जू॥ श्रीराधा हं-
सि मोहन पकरे अपने बस करि लीनेजू॥ रंग मचाइ नचाइ गवायो मन भाये सु-
ख कीने जू॥ कहत लाल छूटन नहिं पैहो बिनु फगुआ बहु दीने जू॥ सो बस
परे भागि कित जैहो बादि चतुरई कीने जू॥ राधा जू के पाय पलोटो अरज क-
रो करि जोरी जू॥ तब चाहै छोरो तो छोरैं नृप वृषभान किशोरी जू॥ हाहा खा-
त लाल कर जोर करत बहुत मनुहारी जू॥ यह गति लखत देवगन व्याकुल ख्या-
ल हंसत दे तारी जू॥ तीन लोक जाकी चरण छांह बल जियत बसत सुख पा-
ई जू॥ ताकी गोपी जनके आगे चलत न कछु ठकुराई जू॥ शिव ब्रह्मा इन्द्रादि-
क जाको परसत चरण डराहीजू॥ ताको मुकट उतारत गोपी तनिक संक जि-
य नाहीं जू॥ यादासी माया इक फेरे जग परबस है नाचै जू॥ ताहि नचावत पक-
रि गोपिका लखि जिय अचरज राचै जू॥ अस्तुति करत अधर सूखत हैं नेति क-
हत तऊ वेदा जू॥ गारी ताहि निशंख देत गोपी जन करत न खेदा जू॥ ध्यान ध-
रत पूजत बहु भांतिन तदपि ध्यान नहिं आवे जू॥ ताहि गुलाल लगाइ हंस-
त सब करत जोई मन भावे जू॥ शिव समाधि श्रम साधि करत नित तऊ झल-
क नहिं देखे जू॥ फेट पकरि तेहि जान देत नहिं ब्रज युवती सुख लेखे जू॥ जा-
को रूख चाहत त्रिभुवन में सुर मुनि नर भय पागे जू॥ हाथ जोरि सो अरज क-
रत हैं राधा जू के आगे जू॥ वेद मंत्र पढ़ि साधि करम विधि यज्ञ करत जेहि-
लागी जू॥ ताको मुख माड़त के धार सों ब्रज युवती रस पागी जू॥ यह अद्भु-
त गति गति लख नैं परत कछु देव विमानन भूले जू॥ मोहे फिरत सार नहिं
जानत तऊ केलि सुख फूले जू॥ रमा पलोटत चरण सुरसती गुन गन गा-
इ सुनावै जू॥ ताके पद नूपुर दै गोपी निज सुख नाच नचावै जू॥ बरनैं कहा
बरनि नहिं आवैको समुझै जो गावै जू॥ दल्लभ बल हरिचन्द कछुक सों-
बल्लभ अनजर आवै जू॥ २॥ **बिहार**

राग बिहाग॥ सुन्दर सेजन बैठे पीतम प्यारी॥ झिल मिलात दीप ज्योति
संग दोऊ सोवत ऊंची अटारी॥ रिझवत हिलि मिलि करि रस बातें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फैली बदन उजियारी ॥ दीप सों परस्पर मुख अवलोकन हरीचन्द बलिहारी ॥ १ ॥

श्यामघटा

सुखारुचि ॥ श्याम संग श्यामा रंग भरी राजत ॥ अरध ओट घूंघर पट कीन्हें लखि रति मन्मथ लाजत ॥ ध्रु० ॥ नील निचोल मध्य मुख ससिकी फैली घटा सोहाई ॥ झिलमिल जोति एक मिलि दीपत्ति महलनि अति छबि छाई ॥ १ ॥ श्यामहु बने श्याम रंग बागे अनुरागे पिय प्यारी ॥ हरीचन्द लखि युगुल माधुरी सरबस डान्यो वारी ॥ २ ॥

अष्टसखा

छप्पय ॥ श्रीदामा सुखदान कृष्ण के परम प्रान प्रिय ॥ वसुदामा शुभनाम दाम मनि मय जाके हिय ॥ सुबल प्रबल परिहास रसिक मंगल मधु मंगल ॥ तोक सुखद ब्रज लोक कृष्ण अनुरूप कृष्ण कल ॥ अर्जुन पालक गोवास बहु ऋषभ वृषभ यूथादि पति ॥ हरिजू के आठ सखा सदा सुमिरत मंगल होत अति ॥ १ ॥

दीनता

श्री वल्लभ की सरि करै कौन ॥ प्रगटे प्रभु गुविन्द मन वाहक भक्त कारने जौन ॥ परम पतित तारन करुना मय रसनिधि बुधला भौन ॥ हरीचन्द जो इनहि भजत नहिं महा अभागो तौन ॥ २ ॥

तथा

श्री वल्लभ प्रभु मेरे सर बस ॥ पचौ तृष्णा करि योग यज्ञ कोउ हमको तो इक इहै परम रस ॥ हमरे मात पिता पति बन्धू हरि गुरु मित्र धरम धन कुल यश ॥ हरीचन्द एकहि श्री वल्लभ तुज सब धान भये इनके बश ॥ २ ॥

श्री बड़े गिरिधर जी को पद

श्री विट्ठल सुत गुण निधान श्री रुक्मिणी जीवन प्रान बन्दे श्री गिरधर प्रभु षट गुन सम्पन्न धीर । अतिही रिझवार रसिक सकल कला गुन प्रवीन बन्धुन सिर छत्र छांह मेंटत जन पीर । सेवा रसपरस पात्र पण्डित जन मण्डित कर खंडित कृत माया मति छण्डित भवपीर श्री रानी प्रान नाथ गावत श्रुति ^

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विशद गाथे हरीचन्द हाथ माथ धरत वल्लवीन ॥ २ ॥

श्रीरघुनाथ जीको पद

श्री विट्ठल नन्दन जग बन्दन जैजै श्री रघुनाथ। जान किरमन शमन जनश्च घ्रपात पितु पद रज शुनगाथ॥ सेवा रोचक मोचक भवरुज कृत बल्लभी सना- थ। हरीचन्द अनुभव वियोग कृत सदा सहायक साथ॥ १॥

श्री गोपी नाथ जीकोपद

श्री वल्लभ सुत प्रथम प्रगट लीला रसभाव गुप्तजै जै श्री गोपी नाथ भक्तन सुखदाई। गावत गुन वेद चार तऊ नहिं पावे पार महिमा कोउ कहि न सक त गोप वंश राई॥ पुष्टि पथ करन काज प्रगटे हैं भूमि आज गावत सब ब्रज- जन मिलि आनन्द बधाई॥ हरीचन्द यश गावे बहुत बधाई पावे देखत त्रै- लोक सब बलि बलि जाई॥ १॥ तथा

तथा॥ श्री वल्लभ गृह महामंगल भयो प्रगट भये श्री गोपी नाथ। मरया- दा श्रुति रूप रमरत हित संकर यन जन कियो सनाथ। अक्षर ब्रह्म रूप शु- भ सोहत अनुज धाम जग धाम स्वरूप योग ज्ञान कर्म्मादिक मारग थापन हित प्रगटे द्विज भूप। संवत् पंद्रह सो शुभ सर सठ आस्वनि कृष्ण द्वादशी जानि। श्री महा लक्ष्मी जू के उदर ते प्रगटे हैं सब सुख की खानि। पुष्टि प्र- वेश हेत अधिकारी करन कियो लीला विस्तार। कहि जैजै ब ल्लभ सु- त दोऊ हरीचन्द जन भयो बलिहार॥ २॥

श्री घनश्याम जी को पद

श्री विट्ठल घर अतिहि उछाह॥ रानी पद्मावती सुत जायो पूरी अपने जनकी चाह॥ आस्वनि वदी तेरस रविवासर बाढ्यो गोकुल प्रेम प्रवाह। हरीचन्द वैराग प्रगट गुन जै जैजै श्री कृष्न वती नाह॥ १॥

श्री गोविन्द राय जी को पद

श्री गुविन्द राय जयति सुन्दर सुखधाम॥ देवि देव मेटि सकल कृष्ण रू- प थापन नित सुन्दर वर रूप निज भक्तन अभिराम॥ सुन्दर मरयाद रूप-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोक रीति स्ववस भूप श्री भागवत थापन सुख मयसु ख्याति नाम ॥ हरीचंद विट्ठल सुत भक्ति भाव भूरि संयुत राजभाव सेवन हरि सुजन पूरण काम ॥ २ ॥

श्री बालकृष्ण जी को पद

श्री रुक्मिणी नन्दन जय जगवन्दन बालकृष्ण सुख धाम ॥ सुंदर रूप नैनरत नारे भक्तन पूरण काम ॥ रस वात्सल्य करन अनुभव नित विरह विभूनन हरि सुख नाम ॥ हरीचन्द विट्ठल सुखदायक प्रिय उन हरि रूप अभिराम ॥ २ ॥

श्री गोकुलनाथ जी को पद

श्री वल्लभ निजमत राख लियो ॥ जीति सभा वादी कठोर वहु माला तिलक दियो ॥ अद्भुत अचरज बहुन दिखाये खल नृप निरखि भियो ॥ हरीचन्द मरयाद राखि निज जश जक्त प्रगट कियो ॥ २ ॥

श्री यदुनाथ जी को पद

श्री यदुपति जैजै महराज ॥ विरह गुप्त अनुभवत प्रगटि जग महं विराग को साज ॥ निबसत रह लघु कहन सुनत लहु छांड़ि जगत के काज ॥ हरीचन्द परमारथ पूरन गोविंद भक्ति जहाज ॥ २ ॥

सिंदूरा

धमार ॥ हमें लखि आवत क्यों कतराये ॥ साफ कहन क्यों न जिय की चलन जो छांह सो छांह मिलाये ॥ होरी में का वरजोरी करोगे क्यों इतने इतराये ॥ रूप गरब फागुन मद माते ताहू पैं अति रसिकाये ॥ जो तुम चाहत सो नहिं ने कछु चलो रहो न लगाए ॥ हरीचन्द तुमरे व्यवहारन कुल है फल पाये ॥ २ ॥

बधाई

आसावरी ॥ सुनत जनम वृषभानु लली को उठि धाई ब्रजनारी हो ॥ मंगलसाज लिये करकंजन पहिरे रंग रंग सारी हो ॥ जो जैसे तैसे उठि धाईं सुनतहि स्वामिनि नामा हो ॥ भादों नदी सरस उमगाईं चहुं दिशि ब्रज की वामा हो ॥ बेनी शिथिल खसित कच भुमुमन लुलित पीठ पर सोहें ॥ कांजर नैन अंचल नखन देखत ही मन मोहें ॥ भुम भुम मंडित मुख शशि शोभित ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेंदी हीर जराई ॥ अधर तमोल रंग सों भीने गावत सरस बधाई ॥ आनन्द उमगे गात गात सब हिय अति अधिक उछाह ॥ सब घर पुत्र भयो धन बाढ्यौ सबही के मनु व्याह ॥ लोचन तृषित दरस बिनु व्याकुल पगहू सों बढ़ि धावें ॥ चौंकि चौंकि चितवत चारहु दिसि मग मनु कंज बिछावें ॥ आइ जुरीं वृषभानु भौन में मुख निरखत सुख पायो ॥ पद परि तरवा चूमि निरख दृग जन्म सुफल करवायो ॥ धनि दिन धनि छिन धन पल धनि यह घरी सोहाई ॥ जामें तीनि लोक की स्वामिनि भानु भवनि प्रगटाई ॥ नाचत गावत करत कुलाहल प्रेम उमंगि अकुलानी हो ॥ हसत प्रमोद करत मन फूलत बोलत कोकिल बानी ॥ अति रस मत्त नदत नहिं काहू उछलित रस आवेसा ॥ अंचल खुलत नाहिं सुधि तन की भई एकही भेसा ॥ सब ब्रज को सिंगार रूप रस भाग सुहाग सुहायो ॥ मोहन की सरबस संपति संग मिलि बरसाने आयो ॥ को कहि सके कहा कहि भेषे कबि पै नहि कहि जाई ॥ जो सुख शोभा ता छन बाढ़ी अनुभव नैन लखाई ॥ नन्द भवन तें बढ़ि सुख तोहि छन क्यों प्रगटायो हो ॥ हरीचन्द बल्लभ पद बल तें केवल यह लखि पायो हो ॥ १ ॥

मलार

हमारे तन पावस बास कस्यौ ॥ ध्रु० ॥ बरसत नैन बारि मन ही छिन दुख घन उमड़ि परयो ॥ युगुन चमकि अंगार बिरह की स्वासा बातु भस्यो ॥ हरीचन्द प्रिय करो मिलि नातरु गात जस्यौ ॥ १ ॥

जलबिहार

हमें तुम देहो का उतराई ॥ पार उतार देहिं जो तुम को करिके बहुत रेबवाई ॥ जोबन धन रहु हैं तुमरे ढिग सो हम लेहिं छोड़ाई ॥ हम तुम्हरे बस हैं मनमोहन जो चाहो सो करो कन्हाई ॥ निरजन थनंगे नाव लगाई करी केलि मन भाई ॥ हरीचन्द प्रभु गोपी नायक जग जीवन ब्रज राई ॥ १ ॥

तीज को पद

हमारे भाई स्यामा जू की जीति ॥ हारो सदा जहां पिय प्यारो यहै प्रीति की रीति ॥ प्रेम होड़ में बहु नायक बनि रबाई श्याम प्रतीति ॥ यदपि निरन्तर लखत रहत न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहूतऊ नाम की भीति। होत अधीन भौंह फेरन में यहै यहां की रीति। हरीचन्द याही सों सबसों सरस युगुल की भीति॥ ४॥

बधाई॥ हम जो मनावत से दिन आयो। कीरति सुता प्रगट बरसाने आयो गीत बधायो। करि सिंगार चलीधर घर तें मंगल साज सजायो। हाथनि कंचन थार बिराजै चौमुख दीप जगायो॥ भाई मिलि वृषभान गोपके अति आनन्द उपजायो॥ आपे दीने कलस धरायें टीको सबन लगायो। गावत गोपी तन मन ओपी द्वार निशान बजायो॥ हरीचन्द तेहि समय जाइ के बहुत बधाई पायो॥

होरी के पूजन को पद

आजु हरि खेलत रसभरि संग वृषभान किशोरी॥ पूना निशि डहडह उजियारी बांह बांह में जोरी॥ १॥ चांदनि में गुलाल की चमकनि अरु बुक्कन की भोरी॥ यमुनातीर सेत बारू मधि अति शोभित भइ होरी॥ २॥ इत सब सखा खेल बौराने उत मद माती गोरी॥ अद्भुत छबि हरिचन्द देखि के रह्यो हरषि तृण तोरी॥

सांझी को पद

आजु दोउ खेलत सांझी सांझ॥ नन्द किशोरी राधा गोरी जोरी सखियन मांझ॥ १॥ कुसुम जुनन में रुनझुन बाजत कर चूरी पग झांझ॥ हरीचन्द विधि गरब गरूरी भई रूप लखि बांझ॥ २॥

होली

रेखता॥ बचे रहो जरा यह बदनामी फाग है॥ आंखों की भी हमसे तुमसे लाग है॥ इस ब्रज का तो सभी चवाई लोग है॥ आंख लगाना यहां बड़ा एक भोग है॥ मेरी तुमरी प्रीति बहुत मशहूर है॥ तिस्से भी होरी रंग चकनाचूर है॥ लगी आंख भी छुटी आज तक है कभी॥ करो लाख तदबीर यहां क्यों नहिं सभी। उतरे जी के साथ यह अजब खुमार है॥ हरीचन्द बचना इसलिये दुसवार है॥

समधिन

मधुमात॥ होरी में समधिन आई॥ अहो फागुन त्योहार मनाई॥ यथा शक्ति कीन्हो सबही ने समधिन को उपचार॥ समधिन जू ने बहुत करायो॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आदर शिष्टाचार ॥१॥ समधिन की तो चुपरी चमरी चोटी सों घोलाय। समधिन को लखि रपटि परत हैं समधी को मन धाय ॥२॥ समधिन की तो अतिहि चीकनी फिसिल फिसिलि सब जात। देहरिया रंग भीनि रही जहां भविशृत सबै बरात ॥३॥ सबै जुड़ावत समधिन को लखि बुक्का रंग सुख भीजि। तब समधिन की चुम्बन लगत हैं सारी रंग सों भीजि ॥४॥ छाती मीड़त सब समधिन की रूप छटा छवि देखि। डारत अतर लगाइ अरगजा रंगीली समधिन पेखि। ५॥ समधिन जू लगवावत डोलत सब सों चोआ रंग ॥ फटी दरार परी समधिन की चोली उमिर उमंग। ६॥ समधिन जू अधरसों अरतुम इतो नवन नहिं योग॥ मानत तुम्हरी नृपहूं सो बढ़ि धाय सबै ब्रज लोग ॥७॥ फैलि रही चहुं दिशि समधिन की कीरति की नव बेलि ॥ तुमहिं देखि सब करत रंग सों होरी रस क सिरेलि ॥८॥ ढाढ़ो होत तुमहिं देखत ही आदर हित दरबार। गांव भरे की नारि तुमहिं इक आदर देत अपार ॥९॥ इहि बिधि समधिन रंग बढ़त ब्रज कौन सकै सो गाय ॥ नित दूलह नित दुलहिनि पै जन हरीचन्द बलि जाइ ॥१०॥

बिहार

राग यथारुचि॥ पिया मुख चूमत अलकन टारि॥ सोई बाल मुरी पलकन की छवि रहे लाल निहारि ॥१॥ कबहुं अधर हरुये कर परसत रहत भवंर निहारि॥ अञ्जन मिसी सिंदूर निरखि रहे दरदन इक पल टारि ।२॥ जागी भरि आलस दोऊ भुज पी लल के गलडारि ॥२॥ खींचि चूमि मुख पास सोवायो हरीचन्द बलिहारि॥३॥ महरानी तिहारो घर सुफल फलो ॥ सुनवी कीरति तें कन्या जनि सब ब्रजजन को कियो भलो ॥१॥ कोऊ गावत कोउ हंसत मोद भरि कोऊ अति आनन्द रलो ॥ देखि चन्द मुख कुंवरि लली को आरि फेरि तन मन सकलो ॥ २॥ आनंद मगन सबै ब्रज वासी सब जिय को दुख पगनि दलो ॥ हरीचन्द युग युग चिरजीओ युगुल कहानी युगुल चलो ॥३॥

दीनता

यथारुचि॥ हमारे निरधन की धन राधा ॥ साधन कोटि छाड़ि इनही को चरण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमल अवराधा ॥१॥ कूलके बल हम गिनत न काहू कारन जिय कोऊ साधा ॥ ह-
रीचन्द इन नख राशि मेरी हरी तिमिर भवबाधा ॥२॥

धनाश्री

चौताला ॥ महाकुंज सुजनमें मिलिके विहार कीने तहाँ बाँधि आसन समा-
धि समुझाव जिन। जौन अंग लाग्यो पिया अंगनमें बारबार ताँपै कर धूरकों रमाइ
बतलावै जिनि ॥ हरीचन्द जाही चप नितही बिलोके श्याम ताहि मूंदि योग को
अयोग ध्यान लावै जिनि ॥ जाही कान सुनी प्यारे हरिकी मधुर बातैं हाहा उधो ता-
ही कान अलख सुनावै जिनि ॥१॥ **स्फुट**

राग यथारुचि ॥ मनकी कासों पीर सुनाऊं ॥ बकनो व्यथा और पतखोनी सबै
अबाई गाऊं ॥१॥ कठिन दरद कोऊ नहिं हरिहै धरिहै उलटो नाऊं। यह तो जो-
जानै सोइ जानै क्योंकरि प्रगट जनाऊं ॥२॥ रोम रोम प्रति नयन श्रवण मन के-
हि धुनि रूप लखाऊं ॥ बिना सुजान सिरोमणि री केहि हियरो काढ़ि दिखा-
ऊं ॥३॥ मरमिन सखिन वियोग दुखिन क्यों हरि निज दशा रोआऊं ॥ हरीचन्द पि-
य मिले तो पगगहि बाट रोकि समुझाऊं ॥४॥

तथा ॥ तू केहि चितवत चकित मृगीसी। केहि ढूंढत तेरो कहा खोयो क्यों अ-
कुलात लखाति ठगीसी ॥१॥ तन सुधि करि उघरतरी आँचर कौन ख्याल तू-
रहति खगीसी ॥ उतरु देत न खरीजकी ज्यों मद पीये कै रैन जगीसी ॥२॥ चौंकि
चौंकि चितवति चारिहु दिशि सपने पिय देखति उमगीसी ॥ भूलि बैखरी मृग सा-
वक ज्यों निज दलतजि कहुं दूरि भगीसी ॥३॥ करति न लाजहाट बारनकी कुल-
मरयादा जाति ढगीसी ॥ हरीचन्द ऐसेहि उरझी तो क्यों नडोलत संग लगी-
सी ॥४॥

श्रीमहाप्रभुजीकी बधाई

आजु ब्रज साँची बजत बधाई ॥ रति पथ प्रगट करन को द्विज वपु वल्लभ प्रगटे
आई ॥१॥ दैवीजन हित कारन भूतल लीला फेरि दिखाई ॥ हरीचन्द भूले ल-
खि निज जन लियो बाँह गहि धाई ॥२॥

तथा ॥ आजु प्रेम पथ प्रगट भयो भुव जनमें श्री वल्लभ पूरन काम ॥ कठिन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काल कलि देखि दयाकरि आपुहि चलि आये द्विजधाम ॥१॥ बहे जात अपने जनलखिकै धस्यो बाँह गहि कहि हरिनाम ॥ हरीचन्द रस मय वपु सुन्दर एक तराधा सुन्दर श्याम ॥२॥ तथा

निजपथ प्रगट करनकों द्विजहै आपुहि प्रगट भये हरि आज ॥ माधव कृष्ण इकादशि गुरुदिन लछमण भटगृह पूरण काज ॥१॥ दैवीजन मन अतिहुल-साने फूल्यो व्रजको सकल समाज ॥ हरीचन्द मिलि नाचत गावत मिले भक्त-जन तजिजगलाज ॥२॥ तथा

आजु व्रज घरघर बजत बधाई ॥ द्विजवपु लै नन्दनन्दन प्रगटे लछिमनभ-टघर आई ॥१॥ फेर बहै लीला सोई रस निजजन हेत दिखाई ॥ हरीचन्द्से अधमजानि निजतारे भुजगहि धाई ॥२॥

होली

योबनकैसे छिपाऊँ री रसिया परो पाछें ॥ झलकत तन दुरि सारी सो काढ़ि ल-गत तमासे गाऊँरी ॥१॥ मुख ससि चमक नील घूँघट में ज्यों त्यों सकुचि चुरा-ऊँरी ॥ येइकसों है अंचल बाहर इनकह कहा दुराऊँ री ॥२॥ बजमारे विधियों सिरअये कहाकरू कित जाऊँरी ॥ हरीचन्द गोकुल में बसिके पतिव्रत कैसे निभाऊँरी ॥३॥ यहि विधि सिरजे नाहिंरी तेरे जोबन दोऊ ॥ रहे दुरे कित ये-सिसुतामें सो अब प्रगट दिखाहिंरी ॥१॥ उमगे परत हरत मन हरिको कंचु कि मेन समाहिंरी ॥ हरिचन्द निधिमदन धरीनिज इनहिं संपुटनिमाहिंरी ॥२॥

मानकोपद

यथारुचि ॥ नेकु निहारु नागरी हौंबलि ॥ इती रुखाई प्रान पिया पैं मा-नन करु सखि मानरी उठि चलि ॥१॥ फूलत लपबिरचत तउ प्यारो बिरह कुलासन जात चले गलि ॥ नूइत बैठी भौंह तनेनत नहिं सोहात मोहि यह रूखो कलि ॥ खसित निशानायक पच्छिम दिशि आधीसो बढ़ि रैन चली ढ-लि ॥ अरुन शिखाधुनि सुनियत कहुँ कहुँ सीरी पवन चली सुगंध रलि ॥ चलि किन कुञ्ज भवन तू भामिनि अपनी सौंतिन कों छलबल छलि ॥ प्रथम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मान पुनि सहजहि मिलि वो सुनि बैरिनि रहि जैहैं जलि जलि ॥ कसि-
कञ्चुकि नैनन दै काजर नूपुर छाड़ि अतर अंगन मलि। बिन बिलम्ब
उठि मिलु प्यारे सों बिरह दवागी मिलि श्रम जल दलि। भाग भरी अनु
रागभरी सखि पीतम सरस सोहाग फलन फलि। हरीचन्द सखि साथ-
गवन छवि नैनन ते नहिं जाइ कबहु टलि ॥ ७॥

मल्लार

बरसा में कोउ मान करत है तू कित होत सखी री अयानी ॥ यह ऋतु पीत-
म गर लागन की तू रूसत कित होइ सयानी ॥ देखुन कैसी छुई अँधि-
यारी बरसि रह्यो रिमि झिम लखु पानी ॥ हरीचन्द चलि मिलु पीतम
सों लूटिन रति निधि पिय मन मानी ॥ १॥

मलार

भीजत सांवरे संग गोरी ॥ अरस परस बातन रस भूली बांह बांह में जोरी॥
कदम तरे ठाढ़े दोउ ताने एकहि अरुन पिछोरी ॥ चुअत रंग अंग बस-
न लपटि रहे भीजि भीजि दुहु ओरी ॥ जलकन श्रवत संग बगी अल-
कन करत युगुल चित चोरी ॥ गावत हंसत रिझावत मिलि मिलि पुनि-
पुनि भरत अंकोरी ॥ बरसत घेरि घेरि घन उमगे चपला चमकत जोरी॥
बोलत मोर कोकिला तरुपल पवन चलत झकझोरी ॥ अति रस रह-
सबढ्यो वृन्दावन हरित भूमि तरु खोरी ॥ हरीचन्द छवि दरद नदृगते
निरखिं भीजती जोरी ॥ १८ ॥ मलार

हमारी प्यारी सखियन की सिरताज ॥ भोरी गोरी पिय रस बोरी लाज सुहा-
गू जहाज ॥ ब्रज रानी कीरति सुखदानी पूरनि यसुमति काज ॥ नन्द ब-
धू की नैन पूतरी मोहन की सुख साज ॥ भानु रायके घरकी दीपक पाल-
निभक्त समाज ॥ हरीचन्द पिय सहित करौ नित अविचल ब्रजमें राज॥२॥

इति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
तथा मोटे अक्षरों की म-	अनेकार्थ	पद्मावती खंड	रासलीला वनमालीला
ये तथ चौर व क्षेपक	छंदोर्णव पिंगल	शुकबहत्तरी	दोहावली व रत्नावली
रामायण तुलसी कृत	कविकुल कल्पतरु	बकावली सुमन	गोकर्णमाहात्म्य
सातों काण्ड	रसराज	चहार दरवेश	श्रीगोपाल सहस्रनाम
१ बालकाण्ड	सतसई मूल तथा स-	क़िस्सा हातिमताई	कथा सत्यनारायण स-
२ अयोध्याकाण्ड	सभाविलास	अपूर्व कथा	हनुमान बाहुक
३ आरण्यकाण्ड	तुलसी शब्दार्थ	क़िस्सा गुल सनोबर	जनकपच्चीसी
४ किष्किन्धाकाण्ड	भजनावली	सहस्र रजनी चरित्र	आनंदामृतवर्षिणी
५ सुन्दरकाण्ड	प्रेमरत्न	राबिन्सन क्रूसो का इतिहास	ब्रजयात्रा
६ लंकाकाण्ड	युगलविलास	वैद्यक	कायस्थ वर्णनिर्णय
७ उत्तरकाण्ड	चित्रचन्द्रिका	निघण्टु भाषा	बिहार विंद्रावन
रामायण शब्दार्थ की-	बारहमासा बलदेव कृ-	अमरविनोद	समर बिहार विंद्रावन
रामायण का इतिहास	मनोहर लहरी	वैद्यजीवन	कल्प भाष्य
रामायण मानसदीपिका	गंगालहरी	औषधिसंग्रह कल्पवल्ली	दरसी
रामायण कवितावली	यमुनालहरी	अमृतसागर बड़ा व छोटा	अक्षरावली
रामायण गीतावली	जगद्विनोद	वैद्यमनोत्सव	स्वयंबोध
रामायण गीतावली स	राग	ज्योतिष	ज्ञानचालीसी
विनयपत्रिका भा- मा-	रागप्रकाश	जातकचंद्रिका	स्नेहावली
विनयपत्रिका टी- शि-	लावनी	जातकालंकार	बालाबोध
वेदान्त	श्रृंगार बत्तीसी	देवज्ञाभरण	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
योगवाशिष्ठ	क़िस्सा वग़ैरह	ज्ञानस्वरोदय	किताब जंत्री
प्रबोध चंद्रोदय नाटक	नानार्थ नाम संग्रहावली	रमलसार	गणितकामधेनु
काव्य	चमत्कार	इन्द्रजाल	लीलावती
सुखसागर	शिवसिंह सरोज	मुतफ़र्रिक़ात	पटवारियों की पुस्तक ठ आ-
कथासागर	भक्तमाल	शनिश्चर की कथा	सरिश्ते तालीम की
विश्रामसागर	रामाभिषेक नाटक	ज्ञानमाला	पुस्तकें
प्रेमसागर	इन्द्रसभा	गोपीचंद भरतरी	संस्कृत
ब्रजविलास बड़ा व छोटा	विक्रमविलास	कथा श्री गंगाजी	ऋजुपाठ १ भा- २ व ३ भा-
रसिकप्रिया	बैतालपच्चीसी	[illegible]	धात्वर्णव
विजयमुक्तावली	सिंहासनबत्तीसी	भरतरी रीति	नागरी व कैथी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
वर्णमाला कैथी १भा·२	पद्यसंग्रह	रजिस्टरहाज़िरी मकतबाला	ऐक्ट चौपायों का
तथा कैथी फ़ारसी नागरी	भाषाकाव्यसंग्रह	क़ानून	मदाखलत बेजा
हरूफ़ मुफ़र्दात	कवित्तरत्नाकर १भा·	पटवारियों के क़ायदे	१ सन् १८७१ ई०
अक्षराभ्य	२ भाग	उर्दू कैथी महाजनी	ऐक्ट मजमूआ ज़ा-
वर्णप्रकाशिका १भा.२भा	मंगलकोष	टिकट के लाइसन्स का	बता फ़ौजदारी १०
सूरजपुर की कहानी	अंकप्रकाश	ऐक्ट २ सन् १८७८ ई०	सन् १८७२ ई०
धर्मसिंह का वृत्तांत	गणितप्रकाश १भा·	नागरी	ऐक्ट मालगुज़ारी
शिक्षावली	तथा २भाग ३,४व५	ऐक्ट लगान मग़रबी	मग़रबी व शिमा-
शिशुबोध	गणितक्रिया	व शिमाली १० सन्	ली १९ सन् १८७३
पत्रहितैषिणी	क्षेत्रप्रकाश	१८५९ ई०	ई०
पत्रदीपिका	क्षेत्रचंद्रिका २भाग	इण्डियन पिनल	तरमीम मजमूआ
विद्याचक्र	सकीलदायरा	कोड मजमूआ ज़ाबि-	ज़ाबिता फ़ौजदा-
विद्यांकुर	रेखागणित १भा·व २	ता फ़ौजदारी ऐक्ट	री १२ सन् १८७४
पदार्थविद्यासार	बीजगणित १भा·व·२	२५ सन् १८६१ ई०	ई०
पदार्थज्ञानविटप	रामायण तुलसीकृत	ऐक्ट स्टाम्प १ सन्	तक़ावी के क़ायदे
भोजप्रबंधसार	बालकाण्ड	१८६२ ई०	सवाल जवाब
राजनीति	अयोध्याकाण्ड	ऐक्ट रजिस्टरी २०	पुलिस
भाषालघुव्याकरण	(आरण्यकाण्ड	सन् १८६६ ई०	अवध रुहेलखं-
१ भाग तथा २	किष्किंधाकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प अदालत	ड रेलवे का दस्तू-
भाषातत्त्वदीपिका	सुन्दरकाण्ड	२६ सन् १८६७ ई०	रुल अमल
भाषाचन्द्रोदय	लंकाकाण्ड	मजमूआ ऐक्ट अ-	इति
भूगोलतत्त्व	उत्तरकाण्ड	वध लगान १९ सन्	
भूगोलदर्पण	गुटका १भा·व २ व ३	१८६८ ई० पुरज़ा	जो पुस्तक छप रही
इतिहासतिमिरनाशक	हिदायत नामा मुदर्रि-	दारी २६ सन् १८६६	हैं उनके नाम नीचे
१भा· २ व ३ भाग	सान्	ई० वग़ैरा	लिखे हैं
अवधदेशीय भूगोल	पशुचिकित्सा	ऐक्ट स्टाम्प दस्ता-	आनंद रघुनंदन
इंग्लिस्तान का इतिहास	पट्टा व खतकैथी	वेज़ात १८६९ ई०	नाटक
भारतवर्षीय इतिहास	तथा क़बूलियत	ऐक्ट ताल्लुक़दारा-	हरिहर सगुणानि-
हितोपत्रिका	रजिस्टर दाख़िल ख़ा-	न मक़रूज़ अवध	र्गुणपदावली
बालाभूषण	रिज तुल्बा मदर्सा	२४ सन् १८७० ई०	

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE